जमसेदजी नसरवानजी

ताता

का

जीवन चरित्र ।



मन्नन द्विवेदी, गजपुरी ।

जमसेदजी नसरवानजी ताता

-:का:-

जीवन चरित्र।

1909
18/12/28

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

(गीता)

लेखक—

पं० मक्खन द्विवेदी, गजपुरी

बी. ए., एम. आर. ए. एस.

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

नं० १२६, हेरिसन रोड, कलकत्ता।

प्रथम बार] सन् १९१८ ई० [मूल्य ।) आना।

२७१, अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" कलकत्तामें
रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित ।

भूमिका ।

कर्मवीर स्वर्गवासी जमसेद्जी नसरवानजी ताताका जीवन नव्य भारतके लिये आदर्श है। ऐसे महापुरुषकी कर्तव्य कहानी हिन्दी प्रेमियोंको भेंट है।

प्रसिद्ध पारसी नेता माननीय डी० ई० वाचाकी अंगरेजी पुस्तकसे मुझको बड़ी सहायता मिली है। इसलिये मैं आपका कृतज्ञ हूं।

अहरौला
आजमगढ़ ।
४—३—१७

मन्नन द्विवेदी गजपुरी ।

समर्पण ।

प्यारे मोहन !

गीतामें बतलाये हुए तुम्हारे कर्मयोगको अपने जीवनमें चरितार्थ कर दिखलानेवाले एक वीर, एक असाधारण महा-पुरुष, तुम्हारे वियोगमें कातरहृदया भारतमाताके एक सच्चे सपूतके जीवनकी संक्षिप्त कहानी तुम्हारे कोमल कमल चरणों पर अर्पित है ।

नाथ ! ऐसा करो कि तुम्हारे इस प्रमोद वनमें रोज ऐसेही सुगंधित सुमन कुसुमित हों, मैं उनकी माला गूथूं और लेकर प्रेमसे, भक्तिसे और अभिमानसे तुमको पहना दूं और तुम भी स्वीकार करते रहो । इस समय यही लालसा है । आगे मालूम नहीं क्या होगा ?

तुम्हारा—

म० हि० बा० ।

: पुस्तक एजेन्सी



जमसेदजी नसरवानजी ताता ।

F Cz 2.

जमसेदजी नसरवानजी



जीवन चरित्र ।



पहला अध्याय ।

जन्म और आरंभकाल ।

धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर, दयावीर, राजभक्त, देशभक्त महात्मा जमसेदजी नसरवानजी ताताका जन्म सन् १८३९ ई० में बड़ौदा राज्यके नवसारी गांवमें हुआ था। धन्य था वह दिन और धन्य थी वह घड़ी और सबसे बढ़कर धन्य था बड़ौदा राज्य जिसने ऐसे महापुरुष को अपनी भूमिमें जन्माया। बड़ौदा राज्यके और उपकारोंके साथ साथ हम उसके इसलिये भी कृतज्ञ हैं कि उसके नवसारी गांवमें हिन्दुस्तान की कला और कारीगरी, उसके उद्योग और आर्थिक उन्नतिमें नई जान डालने वाला महापुरुष पैदा हुआ।

नवसारी हजार वर्षसे अधिक समयसे पारसी पुरोहितोंका

केन्द्र होता चला आया है। पारसमें मुसलमानोंके अत्याचार होने पर जब पारसी भागकर हिन्दुस्तानमें आये थे तभीसे नवसारी एक प्रसिद्ध पारसी नगर होगया है।

जैसा पुरोहितोंकी मंडलीमें हुआ करता है, नवसारीमें वादविवाद और मज़हबी बहस मुबाहसे बराबर हुआ करते थे। धर्मग्रंथ जेंदावस्ताका ठीक अर्थ क्या है और पुराने रिवाज क्या हैं, ऐसेही उदार धर्मके सिद्धांतों पर शास्त्रार्थ होते थे।

ईश्वर निराकार है या साकार, जीवित पितरोंका श्राद्धहोना चाहिये या मरोंका, इन प्रश्नोंको लेकर आर्य्यसमाजियों और सनातनियों को दन्त कटाकट करते जिन लोगोंने देखा है वे पारसी भट्टाचार्य्यों की धर्मचर्या को समझ जायंगे।

जहां परमात्माकी सृष्टिमें अनेक आश्चर्य्यजनक बातें हुआ करती हैं, वहां यह भी एक अचम्भा था कि नवसारीके वचन वीर पारसी पुरोहितोंमें कर्म्मवीर जमसेदजी नसरवानजी ताता ने जन्म लिया। ताताजीके पिता भी एक मामूली हैसियतके पारसी पुरोहित थे।

नवसारी गांवमें कोई अंगरेजी स्कूल नहीं था। इसलिये बालकने एक गुरूजीसे पढ़ना लिखना और थोड़ा बहुत हिसाब सीखा। लेकिन जिसको इतना बड़ा काम करना था उसको इतनी थोड़ी शिक्षासे क्या होता! इसलिये ऊंची शिक्षाके लिये बालक ताता सन १८५२ ई० में बम्बई भेजे गये और वहां जाकर आप उस एलफिंस्टन कालेजमें भरती हुये जिसमें

बम्बई सूबेके करीब करीब कुल बड़े आदमियोंने तालीम पाई है। बम्बई इस ग्रामीण बालकके लिये एक नई, बिल्कुल निराले ढंगकी जगह थी। कारीगरी, रोजगार, कालेज, कचहरी, नाटक-घर सभी चीजें ताताके लिये अजीब थीं। सन १८५८ ई० में १९ वर्ष की उम्रमें ताताजी अपना पढ़ना पूरा करके कालेजसे अलग हुए। उसी साल इस देशकी सरकारी यूनिवर्सिटियां खुलीं और बी० ए०, एम० ए० आदि डिग्रियां कायम हुईं। अगर शौक होता तो ताता महाशय दो चार सालमें ग्रैजुयेट होजाते। लेकिन परमात्माने उनको दूसरे कामके लिये जन्माया था और भारतमाता इस सपूतके हाथसे एक दूसरी उन्नति का स्वप्न देख रही थी।

जिसको पापी पेटके लिये अपनी स्वतन्त्रता बेचकर हां हजूर करना नहीं था, जिसको वकील बनकर अपने देश वासियोंको लड़ाकर, उनका खून चूसकर मोटा होना नहीं था, जिसको ज़मींदार बनकर दीन किसानोंके पैदावारकी कच्ची कुर्की करानी नहीं थी, जिसको पुरोहित बनकर परमात्माकी दलाली करके टका ऐंठना नहीं था, जिसको डांड़ी मारकर लोगोंको ठगना नहीं था, जिसको कुली बनकर पापी आर-काटियोंका शिकार बनकर, नराधम, श्वेत शरीर कृष्णमन व्यापारियोंके लिये फावड़े चलाकर गन्ने पैदा करना नहीं था, जिसके हाथमें भारतकी कारीगरीके उद्धार का यश था, जिसको अपने अशिक्षित और मनमोदक खानेवाले देशवासियों क

साइंस शिक्षा देनी थी, जिसको निरुद्यमी भारतके लिये पानीसे बिजली पैदाकर साहस और चातुर्यका नमूना खड़ा करना था, उसको किसी दूसरी ही शिक्षाकी ज़रूरत थी। इसीलिये युवक ताताने सरस्वती मंदिरका पूजन समाप्त कर लक्ष्मी मंदिरमें नैवेद्य चढ़ानेका विचार किया।

आपके पिताके पास बहुत थोड़ा धन था जिससे वे चीन देशके साथ रोज़गार करते थे। उस वक्त अफीमका रोज़गार इने गिने लोगोंके हाथमें था जो और किसी पर इसका भेद नहीं खुलने देते थे। ताताजी काम सीखनेके लिये हांगकांग भेजे गये, जहां उनको बहुत तजरबा हुआ।

सन् १८६१ ई० में अमेरिकाके उत्तरी और दक्षिणी सूबोंमे लड़ाई शुरू हुई। यह लड़ाई पांच बरस तक चलती रही। इससे न सिर्फ लड़नेवालों का नुकसान हुआ बल्कि लैंक-शायरके कपड़ेके कारखानोंको भी बड़ा धक्का लगा। इन कारखानोंकी रूई अधिकतर अमेरिकासे आती थी। लड़ाईने यह आमद बंद कर दी। रोज़गारी पारसियोंने सोचा कि इस मौकेसे फायदा उठाना चाहिये। प्रसिद्ध पारसी प्रेमचंद रायचंदजी नेता बने। इस वक्त रूईके रोज़गारसे इन लोगोंको ५१ करोड़ रुपये मिले।

ताताजी को भी इसमें बड़ा मुनाफा हुआ। लेकिन इन लोगोंको जितना फायदा हुआ उससे कहीं बढ़कर आगेकेलिये इन लोगोंने अन्दाजा लगाया था, कहीं बढ़कर तैयारी की थी।

इनलोगोंने सोचा था कि लड़ाई बहुत दिन तक चलेगी लेकिन वह बहुत जल्द बंद होगई। इससे इनको बड़ा धक्का लगा; पहली जुलाई सन १८६५ ई० बंबईके इतिहासमें अभाग्य दिन समझा जाता है। अमीर गरीब होगये, गरीब भिखारी बन गये और भिखारी भूखों मरने लगे। इससे ताता परिवार को भी बड़ा नुकसान हुआ।

लेकिन साधारण आत्मायें जिन कठिनाइयोंसे विदलित और विचलित होजाती हैं महापुरुष उनसे और भी दृढ़ होते हैं। ठीक बात तो यह है कि अगर विघ्न बाधाओं को न झेलना पड़े तो आदमी कमज़ोर रह जाय और बड़े बड़े कामोंको न उठा सके।

कोंहार घड़ा बनाते वक्त एक हाथ नीचे देता है लेकिन दूसरे हाथसे बाहरसे घड़ेको पीटकर मजबूत बनाता है। इसके बाद भी घड़ेकी अग्नि परीक्षा होती है। जब आवेमें पक कर वह पक्का होजाता है तब गर्मी और लूहके सताये पथिकोंको अपना ठंढा पानी पिलाकर उनका हृदय शीतल करता है।

महात्माओं की भी यही दशा है। दुखियोंके दुःख दूर करने के पहले उनको खुद दुःख झेलना पड़ता है।

ताताजीने अपना इंगलैंडका कारोबार बंद कर दिया लेकिन हिन्दुस्तानकी दूकान किसी तरह चलाते रहे। आपने हिम्मत नहीं छोड़ी। किसीने बहुत ठीक कहा है कि जो अपनी मदद आप करता है भगवान भी उसकी मदद करता है। ताताके

भाग्यसे थोड़े दिनके बाद अबीसीनियांकी लड़ाई शुरू हुई। बंबईसे जो अंगरेजी पल्टन भेजी गई उसकी रसदका ठीका ताताने लिया। एक बरस का सामान किया गया था लेकिन लड़ाई जल्द खतम होगई और ताताको बड़ा मुनाफा हुआ। इससे आपका कारोबार फिर संभल गया।

जिस रुईके रोजगारने बंबईको धक्का दिया था, आपने फिर उसीको उठाया। एक तेलके कारखानेका दिवाला निकल गया था। कुछ लोगोंके साथ आपने वहींके कल पुरजे खरीद कर सूत कातने और कपड़ा बुननेका कारखाना खोला। उससे मुनाफा बहुत हुआ। लेकिन कुछही दिनोंके बाद आपने उस कारखानेको बेच दिया। बात तो यह थी कि आपकी जबरदस्त आत्मा इस छोटे कारोबारसे संतुष्ट नहीं थी। आपने सोचा कि काम इस तरह उठावें कि भारतवर्ष दुनियांके बड़े बड़े देशोंका मुकाबिला कर सके न कि सिर्फ ताता परिवार को दस पांच लाख रुपये मिलें।

आपने सोचा कि विलायती कपड़ोंका, मुकाबिला करनेके पहले यह देख लेना चाहिये कि उनकी तरक्की की वजह क्या है। देखना है कि मज़दूरी महंगी होनेपर भी किस तरह सस्ते और नुमाइशी कपड़े हमारे बाजारोंमें पटे रहते हैं। आपने विचारा कि कहां इतने दिनोंके सिद्धहस्त अङ्गरेज कारीगर और कहां दिन भरमें अढ़ाई कोस चलनेवाले, ताना तननेवाले अपढ़ जुलाहे, दोनोंका मुकाबिला कैसे होगा, अपने दरिद्र भाइयों

के रक्तका पैसा सात समुद्र पार जानेसे कैसे रुकैगा ।

इन्हीं बातोंको सोच विचारकर आप मैनचेस्टरके कारखानोंको देखनेके लिये इंगलैंड गये । भारतमाताके सौभाग्यसे आप हिन्दू नहीं थे, नहीं तो पंडित मंडली अपनी सारी काबलियत खर्च करके अपने दत्तात्रेयके समयके फटे गले धर्मशास्त्र के पन्नोंको लेकर धर्मकी दुहाई देनेसे बाज़ न आती और न आलसी, दुराचारी, डाही बिरादरीवाले पंचायतसे इनको बाहर किये बिना मानते ।

लेकिन पारसी जातिने कभी अपने धर्मको अपनी उन्नतिमें बाधक न होने दिया और यही कारण है कि इस देशके मुट्ठी भर हमारे पारसी भाई हमारे सब कामोंमें नेता हैं । भारतमाताके इन सपूतों का महत्व जानना हो तो नवीन भारतके कामोंसे इनकी सेवाओंको निकालकर देखिये कि क्या बच जाता है ।

कर्मवीर ताताने आंखें खोलकर इंगलैंडमें सफर किया और वहांके कारखानोंके गुप्त भेदको समझा । आपको इस बातका पूरा विश्वास होगया कि मिल ऐसी जगहमें खोलनी चाहिये जहां आस पासमें कपासकी खेती अधिक होती हो । कुछ दिनके बाद और लोगोंने भी आपके इस विचारसे फायदा उठाया । इसी वजहसे खानदेश, मध्यप्रान्त और गुजरातमें बहुत सी मिलें खुल गईं ।

ताताजीने बहुत सोच विचारके बाद नागपुरको पसंद

किया। आपको इस काममें इतनी सफलता रही इसीसे मालूम होता है कि जगहका चुनाव कितना अच्छा हुआ। एक कंपनी स्थापित हुई जिसका नाम "सेंट्रल इंडियन स्पिनिंग ऐंड वीविंग कंपनी" पड़ा।

ता० १ जनवरी सन् १८७७ ई० में मिल का आरम्भ हुआ। यह वही शुभ दिन है जिस रोज स्वर्गवासिनी महारानी विक्टोरिया इस देशकी राजराजेश्वरी हुईं। उसी दिन मिल खोल कर, ताताजीने मानों यह सिद्ध किया कि सुशासनके लिये औद्योगिक उन्नति का एक दिन भी पिछड़ना ठीक नहीं है। कारखानेका नाम "दी इम्प्रेस मिल" पड़ा। श्रीगणेश तो होगया लेकिन काम जितने महत्वका था उतनाही कठिन भी था।

लेकिन ताता महोदय कठिनाइयोंसे डरने वाले आदमी नहीं थे। जमीन खरीद ली गई, इमारतें खड़ी होगईं। काम चलने लगा। इम्प्रेस मिलके लिये सबसे बढ़कर भाग्यकी बात यह हुई, कि सरवेजनजी दादा भाई उसके मैनेजर नियत हुए। इसके पहले आप जी० आई० पी० रेलवेके ट्रैफिक मैनेजर थे। गोकि आपको कपड़ेके कारखानेका तजरबा नहीं था लेकिन आप सा परिश्रमी, चतुर और ईमान्दार आदमी जिस कामको उठावेगा, उसीको अच्छी तरहसे करेगा। आज इम्प्रेस मिलकी जो उन्नति दिखाई पड़ती है उससे साफ मालूम होता है कि मैनेजरके चुनावमें ताता महोदयने कितनी बुद्धिमता की। इस

देशकी कारीगरीकी उन्नति चाहने वालोंको समझ लेना चाहिये कि औद्योगिक उन्नतिके लिये सरबेजनजी ऐसे कार्य्यदक्ष मैनेजर की उतनी ही आवश्यकता है जितनी ताताजी जैसे साहसी और दूरदर्शी पूंजी वालेकी। ताताके मस्तिष्कसे नित्य नये विचार निकलते थे और बेजनजी उनको कार्य्य-रूपमें लाते थे। कारखाना खोल दिया गया और कपड़े बनने लगे। लेकिन इनसे भी महत्वका काम था कपड़े बेचनेका प्रबंध। अगर जरा भी ढीलापन किया जाता तो विदेशी कारखानोंके मुकाबिलेमें कपड़े पड़े पड़े सड़ जाते या सस्ते दामोंपर निकलकर घाटेपर घाटे लगाते हुए भारत माताके कफनका काम देते। लेकिन परमात्माने ऐसे दो कर्मवीर उत्पन्न कर दिये जो नित्य नये वस्त्रोंसे माताका श्रृङ्गार करेंगे, उसके लाखों निस्सहाय बालकोंको भोजन और कपड़े देंगे। कपड़े खपानेके लिये बाजारकी तलाश होने लगी। चतुर और अनुभवी एजेंट जगह जगह भेजे गये।

यह सब होनेपर ताता महोदयने मालके भेजनेका भी ठीक प्रबंध कर लिया। इस तरह सब काम दुरुस्त होजाने पर इम्प्रेस मिलका काम ठीक चलने लगा। इसके बाद ताताजीने बड़े बड़े शहरोंमें घूमघूम कर देखा कि कारखानेके लिये कहांसे कौन सी नई बात सीखी जा सकती है। इसी विचारसे आप जापान भी गये। वहांसे तरह तरहके विचार लेकर आप बम्बई लौटे।

कहना नहीं होगा कि पहले बहुतसी कठिनाइयां रास्तेमें आईं लेकिन कर्मवीरने सबको दूर हटा दिया। कुछ दिनोंके बाद तो इम्प्रेस मिलकी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की होने लगी। सन १९१३ ई० के अन्त तक इस कंपनीने २ करोड़ ६३ लाख ४५ हजार ७ रुपये मुनाफेके दिये थे। इसका मतलब यह है कि हर एक हिस्सेपर उसका २॥ गुना मुनाफा दिया जा चुका था। यह तो हुआ। लेकिन ताताजी सिर्फ अपनी या अपने हिस्सेदारोंकी उन्नतिसे संतुष्ट रहनेवाले आदमी नहीं थे। आप अच्छी तरह समझते थे कि जो करोड़ों रुपये हिस्सेदारोंमें बांटे गये थे वे उन मजदूरोंके परिश्रमके फल थे जो थोड़ी तनख्वाहों पर कठिन उद्योग करते रहते हैं।

इस विचारसे कई तरहके इनाम मुकर्रर किये गये। कर्मचारियोंके लिये पुस्तकालय और खेलके स्थान बनवाये गये।

इसके सिवाय ताता महोदयने अप्रेंटिसी का कायदा निकाला। नवयुवक उम्मेदवार होकर आपके कारखानेमें काम सीख सकते हैं। कारखाने को अधिकार होगा कि कुछ दिनोंके लिये मुनासिब तनख्वाह पर उनको नौकर रखे। दस सालकी कामयाबीके बाद ताता महोदयने सूत कातनेका कारखाना खोलने का विचार किया।

सन् १८८५ ई० तक सूत कातनेके बहुतसे कारखाने खुल चुके थे लेकिन बारीक माल पैदा करनेवाला इनमेंसे एक भी न था। ताताजीने सोचा कि अब सिर्फ मोटा माल पैदा करनेसे

काम न चलेगा। आपका पूरा विश्वास था कि लंबे धागेकी रूईसे बारीक माल तैयार होसकता है। इसी विचारसे आपने एक कम्पनी खोली जिसका नाम पड़ा "स्वदेशी"।

नागपुरके विक्टोरिया गार्डनके नजदीक जमीन लीगई और वहीं कारखाना खोलने का इरादा किया गया। उसी वक्त बम्बई प्रांत की सबसे बड़ी मिल "धरमसी" नीलाम हो रही थी। उसमें कुल ५० लाख रुपये खर्च हुए थे लेकिन ताता महोदयने उसको १२॥ लाख रुपये पर खरीदा। लेकिन बादमें मालूम हुआ कि उस मिलमें बहुतसी खराबियां हैं। ताता महोदयको इसके लिये बहुतसी कठिनाइयां उठानी पड़ीं लेकिन आप हताश होनेवाले आदमी नहीं थे।

अन्तमें इम्प्रेस मिल की तरह इसमें भी फायदा होने लगा।

इन दो कम्पनियोंके संबंधमें दो एक और बातें बतलाना जरूरी है। आम तौरसे एजेण्टों को तैयार मालपर १ पैसा फी पाउंड कमीशन मिलता था। इस हिसाबसे ताता महोदयको ६० हजार रुपये सालानासे कम कमीशन नहीं मिलता। लेकिन आपका खास मतलब कारीगरीको बढ़ाना था, न कि अपना पाकेट भरना। इसीलिये आप सिर्फ ६ हजार लेते थे। बादमें और भी कमी कर दी गई।

कपड़ेके कारखानेमें आपने एक और बड़ा सुधार किया। आपने सभी पुरानी कलों को निकालकर रिंग चरखों को लगाया। मिसिरदेशकी लंबे धागेवाले कपास की खेतीका

आपने इस देशमें प्रचार किया। नवसारीमें आपने नमूनेके खेत भी बनवाये। इस विषय पर आपने एक छोटी किताब लिख कर प्रकाशित की। हर्षकी बात है कि गवर्नमेंटने इस ओर बड़ा ध्यान दिया है। गवर्नमेंट फार्मोंमें तरह तरहकी कपास बोई जा रही है। गवर्नमेंट इस विषय पर सदा ताता ऐंड सन्स कम्पनीकी सम्मति लेती है।

ताता महोदयने विचार किया कि सिर्फ अच्छी रूई पैदा करनेसे काम न चलैगा। मालके ले जानेका सुविधा होना उतनाही जरूरी था जितना कि अच्छा माल तैयार करना।

उस समय हांगकांग और शंघाईको जानेवाला अधिकतर माल पी० ऐंड ओ० कम्पनी द्वारा भेजा जाता था। उसके बाद दो और विदेशी कम्पनियोंका नंबर था। ज्यों ज्यों मिलोंकी संख्या बढ़ने लगी त्यों त्यों, ये कम्पनियां अपने स्टीमरोंका किराया बढ़ाने लगीं। मिलवाले घबराने और शोर मचाने लगे। ताता-कारखानेका अधिकतर माल चीन और जापानको जाता था। इसलिये तीनों स्टीमर कम्पनियोंके कुटिल सम्मेलनसे आपको भी हानि हुई।

अपनी और अपने देशकी हानिको देखकर चुपचाप बैठना ताता महोदयके स्वभावके विरुद्ध था। जापान जाकर आपने उस देशकी एक स्टीमर कम्पनीसे बातचीत की। कम किराये पर माल लेजाने पर वह तैयार हुई। ताताजीने अधिकांश मिलों से वादा करा लिया कि वे नई जापानी कम्पनी द्वारा अपना

माल भेजें। पी० ऐंड ओ० और उसकी सहगामिनी कम्पनियों को कभी आशा न थी कि मिलवाले इतनी जल्दी एक होजायंगे, एक होकर इतने मार्केका काम करेंगे। इसलिये अचानक यह दशा देखकर वे बेतरह घबराईं। लेकिन घबरानेसे क्या काम चल सकता था? अस्तु उनलोगोंने एक नई चाल निकाली। उनलोगोंने किराया घटाकर १३) और १६) रुपये प्रति घन टनसे २) घनटन कर दिये। पी० ऐंड ओ० ने तो अन्तमें १) कर दिया। कहां मुनाफेसे पेट भरी हुई तीन कम्पनियां और कहां अकेले मिस्टर ताता। बड़ाही विषम युद्ध था। निश्चय ताता महोदय की जीत हुई होती, लेकिन साथी मिलवालोंने अदूरदर्शिता का परिचय दिया। जिस आशासे जाल फैलाया गया था, वह सफल हुई। कहां १६) रुपये और कहां १) रुपया। वे लोग लोभको न रोक सके। लालच-वश उनलोगोंने अपना प्रण तोड़कर अपने देशको अपनी समुन्नत एशियाकी शक्तिके सामने झूठा बनाया, ताता महोदयको नीचा दिखाया, घाटा पहुंचानेवाली कम्पनियोंके हाथमें अपनेको सौंप दिया। इस लड़ाईसे एक लाभ तो अवश्य हुआ कि किराया हमेशाके लिये पहलेसे कम होगया। ताता महोदयने इसके बाद एक और कम्पनी को ऐसीही शिक्षा दी।

इस तरहसे सन् १८७५ ई० से लेकर सन् १८६५ ई० तक ताता महोदयने स्वदेशीकी सफलताके लिये बहुतसे काम किये आपमें बड़ा भारी गुण यह था कि आप करते अधिक थे और

कहते कम। स्वदेशी आन्दोलन उठाने वाले, स्वदेशी पर हजार दफे लेक्चर देनेवाले, उसके लिये कई बार राजदंड भोगे हुए सज्जनोंमें से एकने भी स्वदेशीको उतना अग्रसर नहीं किया जितना महाशय जमसेद्जी नसरवानजी ताताने किया। लेकिन आपके कार्य्य करनेका ढंग ऐसा था कि राजा प्रजा दोनों आपसे प्रसन्न रहते थे। भारतीय प्रजा आपको पूजनीय बुद्धिसे देखती थी। भारत सरकार मुक्तकंठसे आपकी प्रशंसा करती थी और हमारे देशी रजवाड़े सदा आपकी सहायता करने को तैयार रहते थे।

ताता महोदय का जीवन उनलोगोंके लिये विशेष शिक्षाप्रद है जो समझते हैं कि अंगरेजी व्यापारियोंको बायकाट करके हमारी औद्योगिक उन्नति होसकती है। उनको समझना चाहिये कि भारतकी कारीगरीकी जो अधोगति होगई है, उसका सुधारना दो चार दिन या इनेगिने लोगोंका काम नहीं है। राजा-प्रजा, विद्वान्, कारीगर और किसान सब मिलकर अगर काम करैं, तब भी बहुत दिनोंमें हालत कुछ कुछ दुरुस्त होसकती है।

महात्मा गांधीका विचार है कि कल कारखानोंकी आवश्यकता नहीं, रेलवे स्टीम और तारके कारण हमारा पतन होता जा रहा है। आपका कहना है कि प्राचीन ढंग पर हाथसे काम लेकर हम अपनी कारीगरी सुधार सकते हैं। ऐसे पूजनीय नेताकी बात कौन गलत कर सकता है?

अच्छी बात होती यदि कलियुगके स्थान पर फिर सत्ययुग

आजाता। संसार गांधीजीके सात्विक विचारों पर चलने लगता। सभी देश अपने अपने देशके लिये चीजें बनाते, कमाते और खाते, अपना अपना राग अलापते। लेकिन इसके होनेकी कुछ संभावना नहीं मालूम होती है। दूसरे देश कोयला, धूआं, और बिजलीकी सहायता लेनेसे नहीं चूकनेवाले और न हमारी लाख प्रार्थना पर भी वे अपने मालको अपनेही घर रखने पर संतुष्ट हैं। वर्तमान विज्ञानके नयेसे नये आविष्कारोंसे सुसज्जित होकर, अपनी जीती जागती जातिके असंख्य रुपये लगाकर अपने बाहुबलसे प्राप्त की हुई राजनैतिक सुविधाओंसे लाभ उठाते हुए, अन्य देश साल साल, महीने महीने, दिन दिन, घड़ी घड़ी और छिन छिन हमारे बाजारोंको सस्ती चीजोंसे पाटपाट कर अपार धन ढोढोकर ले जारहे हैं। संसारकी घुड़दौड़में न शरीक होकर अपने घरकी रक्षा करनेमेंही किस असाधारण, उद्योगकी, किस अटल धैर्य्य, किस अतुलनीय देशभक्तिकी और कितनी सच्ची राज-भक्तिकी आवश्यकताहोगी! कुछ ठिकाना है!

उद्योगके शिखरपर पहुंचे हुए यूरोपीय देशों और कलापटु जापानका मुकाबिला हम अपने टूटे चरखों और ढीले ढाले करघोंसे कर सकेंगे, यह उतना ही सम्भव है जितना बड़े बड़े किलोंको महिम्नस्तोत्रसे उड़ा देना।

हर्षकी बात है, कि ताता महोदयके विचार समयके अनुकूल थे। आपके प्रत्येक कार्य्य देशकालके अनुसार होते थे। समुन्नत देशोंकी भांति आपने भी अग्नि, वरुण और विद्युतकी उपासना

आवश्यक समझी थी। यही कारण है, कि आपके कल कारखाने बड़ी कामयाबीसे चल रहे हैं, हजारों देशवासियोंका पेट भर रहे हैं, धनवानोंको अच्छा मुनाफा दे रहे हैं और देशका करोड़ो रुपया विदेश जानेसे बचा रहे हैं।

हिन्दुस्तानके बड़ेसे बड़े व्यापारियो और मिल वालोंको जो महत्व मिल सकता था,वह ताता महोदयको मिल गया। 'स्वदेशी' और 'इम्प्रेस' मिलोंके नाम देश हीमें नहीं विदेशोंमें भी फैल गये।

ताता महोदय ऐसे रोजगारियोंमेंसे नहीं थे जो देश हीके रुपयेको इधरसे उधर कर देनेको तरक्की और व्यापार कहते है। आप समझते थे कि जबतक देशके धनको बाहर जानेसे न रोक दिया जाय या विदेशोंके रुपये भारतमें न खींच लिये जायं तबतक व्यापार, व्यापार नहीं और न मुनाफेको मुनाफा कह सकते हैं। आपके कपड़े और सूतकी मिलें इसी इरादेसे खोली गई थीं।

सन् १८९५ ई० में भारतके बने हुए कपड़ोंपर टैक्स लगाया गया। विलायती जुलाहोंके विचारमें हिन्दुस्तानी व्यापारी बहुत मोटे होते जाते थे,इसलिये उनके स्वास्थ्यके लिये आवश्यक था कि उन्हें दुबले होनेकी औषधि दी जाय। शायद इसी मतलबसे हिन्दुस्तानी कारखानोंपर इक्साइज ड्यूटी लगाई गई।

एक तो भारतीय कारीगरीकी दशा वैसे ही खराब हो गयी थी, दूसरे यह टैक्स। आन्दोलन शुरू हुआ। बम्बई मिल ओनर्स एसोसियेशनने गवर्नमेंटकी सेवामें एक मेमोरियल भेजा।

मिस्टर ताता और मिस्टर एन० एन० वाडिया, भारत गवर्नमेंटके फाइनेल मिनिस्टर (अर्थ मन्त्री) के पास भेजे गये।

लेकिन कुछ नतीजा न निकला। इसके थोड़े ही दिन बाद ताता महोदय विलायत गये। वहां आप उस वक्तके भारत-मंत्री लार्ड हैमिल्टनसे मिले। हैमिल्टन साहबकी रायमें हिन्दुस्तानी मिलोंका औसत मुनाफा १० या १२ फी सदीसे कम नहीं था। मिस्टर ताताकी रायमें मंत्री साहबके विचार गलत थे। साहब बहादुरने ताता महोदयसे प्रमाण मांगे। ताताजीने बहुत ही विचार पूर्ण रिपोर्ट तैयार करके यह साबित कर दिया कि हमारी मिलोंके मुनाफे औसतन ६ फी सदीसे अधिक नहीं है। इस रिपोर्टकी एक कापी भारतसचिवकी सेवामें भेजी गई। लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ।

एक और महत्वकी बात कहकर यह अध्याय समाप्त किया जायगा। जब ताता महोदयने मिलोंका काम शुरू किया तब काम करनेवालोंकी बड़ी कमी थी। पहले तो मजदूरे उचित संख्या में मिलतेही न थे, जो मिलते थे उनमें भी बहुतसे जुआरी और चोर थे। इस अभावका दूर किया जाना बड़ा आवश्यक था। कुरला नामका स्थान बंबईके बदमाशोंका अड्डा बन गया था। कपड़ा बुननेवाले अधिकांश मुसलमान जुलाहे थे, जो बड़े कलह-प्रिय और बदमाश थे। बात बातमें ये लोग हड़ताल कर दिया करते थे। ताता महोदयने इनको बहुत समझाया बुझाया लेकिन कुछ नतीजा न हुआ। मजदूरे न मिलनेसे बहुतसी मशीनें रोज

बेकार रहती थीं। भलेमानस मजदूरें लानेके लिये सूरत और भरोच एजेंट भेजे गये। इन जगहोंसे कुछ मजदूरें आये। उनको अच्छी मजदूरी और रहनेके लिये मकान भी दिये गये। लेकिन वे सबके सब रफू चक्कर होगये।

अंतमें मिस्टर तातानें सोचा कि युक्तप्रांतमें मजदूरें सस्ते और बहुत इफरातसे मिल सकते हैं। सन् १८८० के कहत कमीशनने लिखा है कि युक्तप्रांतकी आबादी बहुत घनी है और यहांके बहुतसे लोगोंको रोजगारके लिये बाहर जाना चाहिये। मिस्टर ताताने सोचा कि अगर यहांसे मजदूरें बंबई जायं तो अच्छा हो। आपने सोचा कि युक्तप्रांतमें मजदूरोंको १ आना रोजानासे ज्यादा नहीं मिलता है। बंबईमें जब उनको ६ आने रोज मिलेंगे तब वे खुशी खुशी वहां जायंगे। लेकिन मिस्टर ताताका सोचा हुआ नहीं हुआ। इसके दो कारण मालूम होते हैं। पहली बात तो यह है कि युक्तप्रांतमें भी, मिलमें काम करने योग्य मजदूरोंको उतना कम नहीं मिलता जितना ताता महोदयने सोचा था। दूसरी बात यह है कि घरपर अपने बाल बच्चोंमें रहकर फुरसतके वक्त अपने घरका काम देखते हुए आदमी १ आना रोजमें जितना काम चला सकता है, उतना कई सौ मीलकी दूरी पर, बंबईसी खर्चीली जगहमें अकेला परिवार बंधनसे मुक्त ६ आने पैसेमें नहीं होसकता है।

ताता महोदयने बंबईके मिल ओनर्स एसोसियेशनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया। लेकिन उसने प्रश्नके महत्वको न

समझा और न बातकी सुनवाई हुई। यहां देखना यह है कि जो कठिनाई इस समय मिलवालोंको पड़ रही है उसको मिस्टर ताताने पहलेही सोच लिया था। लेकिन संसारमें अधिकांश मनुष्य आनेवाले संकटको पहलेसे देखनेमें असमर्थ होते हैं। इस संबंधमें मिस्टर ताताने एसोसियेशनके मंत्रीके पास एक पत्र भेजा था। पत्रमें मजदूरोंकी कठिनाई बतलाते हुए दिखलाया गया था कि कारीगरीकी तरक्कीके साथ साथ काफी और अच्छे मजदूरोंका मिलना और भी मुश्किल होजायगा। ऐसी दशामें बुद्धिमान मनुष्यका काम है कि पहलेसे सोचकर आनेवाले संकटको टालनेका यत्न करें। लेकिन जैसा कहा जा चुका है, न तो ताता महोदयकी बात सुनी गई और न कठिनाई दूर हुई। ऊपर दिखलाया जाचुका है कि ताता महोदयने जो ६ आने रोज पर युक्तप्रांतसे मजदूरोंकी उपयुक्त संख्या पानेकी आशा की थी, यह उनकी गलती थी। मजदूरी अगर और बढ़ा दी जाती तो जरूर काम करनेवाले जाते। ज्यों ज्यों उनको ताता मिलोंकी सुविधाओंका अनुभव होता, ज्यों ज्यों उनमें स्वदेशी कारखानों की शुद्ध वायुसे स्वदेश प्रेम अंकुरित होता त्यों त्यों, वे अपने परिवार और ग्रामवालोंको अधिकाधिक संख्यामें ले जाते इस अवसर पर आप पूछ सकते हैं कि साधारण मजदूरी पर युक्तप्रांतके मजदूर दूर देश उपनिवेशोंमें कैसे चले जाते हैं इसके उत्तरमें निस्संकोच और निर्भय होकर कहना पड़ता है कि बहुत कम कुली सही व्यवस्थायें जानने पर उपनिवेशोंमें

जायंगे। दूसरी बात यह है कि आरकाटी लोग कुली फंसानेमें जो नीचतायें करते हैं उनको करनेके लिये देशभक्त ताताके कारखानेका छोटेसे छोटा नौकर भी उद्यत न होगा।

दूसरा अध्याय।

अभ्युदय।

पहले अध्यायमें आपने इम्प्रेस मिल और स्वदेशी मिलकी उन्नति देखी। उनके साथ साथ आपने ताता महोदयके परमोच्च विचार, अद्भुत संगठन शक्तिका भी अवलोकन किया। एक जन्म क्या, कई जन्मोंमें भी इतने बड़े बड़े काम होजायं तब भी बहुत है, लेकिन ताता महोदयके आदर्शजीवन नाटकमें ये दो कारखाने प्रस्तावना मात्र थे। लोहेका कारखाना, बिजली घर तथा रिसर्च इन्स्टीट्यूट उस महापुरुषके महानाटकके तीन मनोरंजक और शिक्षाप्रद अंक थे। इनमेंसे कुछ दृश्य आरंभ होगये थे लेकिन कुछके अभी परदे भी नहीं उठ पाये थे, कि क्रूरकालने अंतिम ड्राॅपसीन समाप्त कर दिया। विचित्र वियोगांत नाटकका खेल दिखाकर ताता महोदय चले गये।

इस अध्यायमें लोहे और बिजलीके कारखानोंके वर्णन किये जायंगे। पहले लोहेके कारखानेके बारेमें लिखा जायगा। ताता महोदय बहुत दिनोंसे सोच रहे थे कि किस तरह लोहेका वृहद् व्यापार इस देशमें किया जाय। विदेशोंसे लोहा मंगाकर

बेचनेवाले तो बहुतसे थे लेकिन देशमें खानोंसे लोहा निकालने की हिम्मत करनेवाले बहुत थोड़े थे। काम उठानेके पहले आपने इस बातकी तहकीकात की कि इस देशमें लोहेकी खानें है या नहीं। अपने खर्चसे आपने बड़े बड़े विद्वानोंको तैनात किया, उनसे जांच करवाई और रिपोर्टें तैयार हुई। पता चला कि मोरभंजमें बहुत लोहा निकलनेकी संभावना है। मोरभंज बंगालकी एक उन्नतशील रियासत है। रयासतसे सहायताका वचन मिला। बंगाल नागपुर रेलवेने भाड़ा कम कर देनेका वादा किया। भारत सरकारने प्रतिवर्ष २० हज़ार टन माल खरीदनेकी जिम्मेदारी ली। सन् १६०७ ई० में २ करोड़ ३१ लाख रुपयोंकी पूंजीसे "ताता आइरन ऐण्ड स्टील कंपनी" की स्थापना हुई। दुःखकी बात है कि ताता महोदयके जीवनमें कंपनी कायम न होसकी। लेकिन उनके सुयोग्य पुत्रोंने आपके उद्देश्यों की पूर्त्तिकर पितृभक्तिका अच्छा परिचय दिया।

कम्पनीकी स्थापना होते होते रुपया इकट्ठा होने लगा। काम धूम धामसे चल निकला। रिपोर्टसे पता चलता है कि लगभग १५ हजार आदमी इस कारखानेमें काम करते हैं। देशके सिवाय इस कारखानेका माल विदेशोंमें दूर दूर तक जाता है। जापान भी इस कारखानेका ग्राहक है यह इस देशके लिये गर्वकी बात है। स्काटलैंड, इटली और फिलीपाइनने भी यहांसे माल खरीदा। हिन्दुस्तानी रेलवे कंपनियोंमें अधिकांशने अपने सामान ताता कारखानेसे मोल लिये हैं। सन् १६१३-१४ ई० में २३ लाखका

मुनाफा हुआ। सन् १९१४ और १९१५ ई० में २४ लाख ८३ हजार-का मुनाफा हुआ। इस तरह ताता महोदयने एक बड़े भारी नये कामको न सिर्फ उठाया बल्कि उसे इतनी जल्दी और इस खूबीके साथ चलाया कि कारखाना स्थायी होगया, हजारों गरीब मजदूरे पलने लगे, न केवल देशका रुपया बाहर जानेसे बचा बल्कि बाहरसे रुपया आने लगा। उद्योगी, चतुर, विचार-वान, सदाचारी, साहसी, सत्यप्रिय, धीर, सहृदय, अनुभवी, शिक्षित, देशकालज्ञ, अर्थशास्त्रका ज्ञाता देशभक्त क्या नहीं कर सकता है।

ताता महोदयकी दूसरी स्कीम बहुत बड़ी और औद्योगिक संसारकी काया पलट करनेवाली थी। परमात्माने पंच तत्वोंको प्राणियोंके कल्याणके लिये बनाया है। लेकिन कादर, मूर्ख और अशिक्षित, प्रकृतिके भिन्न २ स्वरूपोंको देखकर कभी प्रसन्न होते हैं, कभी अचंभेमें आते हैं, कभी व्याकुल होते हैं और कभी डरते हैं। लेकिन विद्वान् और वैज्ञानिक लोग पुरुषका प्रकृति पर महत्व दिखाते हुए तत्वोंको पददलित करके, उनको अपने आधीन करके, अपना, अपने देश और संसारका कल्याण करते हैं। हवाके जोरदार झोंकोंसे ग्रामीणोंके छप्पर उड़ जाते हैं, आग उड़कर उनकी फूसकी राममड़ैयाको भस्म कर देती है, अतिवृष्टिसे उनके खेत बह जाते हैं, मवेशी मर जाते हैं और उनके अपने प्राण भी संकटमें रहते हैं। बिजली चमकी नहीं कि हम भागकर घरमें छिप जाते हैं। संस्कृत पाठशालाओंमें अनध्याय

कर दी जाती है। हमारी तो यह दशा है और विज्ञान विशारद विदेशी वायुसे विंड मिल (हवासे चलने वाले कारखाने) चलाते हैं और अग्नि देवतासे रेल, पुतलीघर और क्या क्या नहीं चलाते।

समयने बतला दिया है कि अपने धार्मिक महत्वकी रक्षा करते हुए, अपने वेद और उपनिषदोंका अध्ययन करते हुए भी हमको उन आडम्बरोंको, उन अंधविश्वासोंको छोड़ना पड़ेगा जो हमारे पूर्वजोंके चलाये नहीं हैं और जो पद पद पर हमको अपमानित और पीड़ित करनेके लिये तैयार हैं। कर्मवीर होना होगा, मातृभूमिकी रक्षाके लिये पाश्चात्य लोगोंका शिष्य बनना पड़ेगा। बहुतसी बातोंमें उनको अपना आदर्श मानना पड़ेगा। महाराज सयाजीराव गायकवाड़ने बहुत ठीक कहा है कि हमको पाश्चात्य देशोंसे साइंस सीखना चाहिये और उनको फिलासफी सिखलानी चाहिये। विद्वान् और देशभक्त बड़ौदानरेशने दो लाइनोंमें नव्यभारतके आदर्श बड़ी खूबीसे दिखला दिये हैं।

इसमें संदेह नहीं कि पाश्चात्य देश और हमारा पड़ोसी बंधु जापान जरूरतसे ज्यादा धनकी ममतामें पड़े हुए हैं। वे हमसे कहीं बढ़कर शक्तिशाली हैं, इसलिये अधिक कहते डर लगता है, लेकिन इतना तो कहनाही पड़ेगा कि वे इस तरह धन और शक्तिके पीछे पड़कर पाप करते हैं। उनकी लोलुपता का परिणाम बड़ाही भयंकर होरहा है। वे अपनी विषय वासना से अपने देशवासियोंमें अधिकांशको दुखी बनाते हुए अपना कोढ़का रोग और देशोंमें भी फैलाते हैं।

अंगरेजी समाजका शूद्रवर्ण कितना गिरा हुआ है और क्या यम यातना भोग रहा है, उसका चित्र देखकर कहना पड़ता है कि पुराणोंमें जिन नरकोंका वर्णन है वे इन अंगरेज दुखियों के घरोंसे कहीं अच्छे होंगे। वर्तमान युरोपीय महाभारत भी अभिमान और लोभका परिणाम है।

युद्धके बाद भारतका कर्तव्य होगा कि इन भलेमानस देशों को समझावे कि भाई, सोना चान्दी, हीरा जवाहिर, नील, कपड़े चमड़े तथा राज्य और व्यापारकी दूसरी बातें ऐसी नहीं हैं जिनके लिये नरमेध यज्ञ किया जाय, जिनके लिये रणगंगा बहाई जाय। धन और पौरुषकी रक्षा करो, लेकिन इतना संहार करके नहीं। जहां वर्तमान संसारके समृद्धिशाली देश दिन रात रुपये रुपयेका स्वप्न देख रहे हैं वहां भारत सर्वथा संतुष्ट होकर बैठा है। खानेकी फिक्र नहीं, कपड़ेकी परवाह नहीं। नतीजा यह हुआ कि आज खाने पहननेको भी न रह गया। 'ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या' का अनर्थ हमारे हृदयमें इतना अधिक समाया है कि निकालनेसे भी नहीं निकलता है। कृष्ण भगवानने स्वयं गीतामें कर्मयोगका महत्व बतलाया, स्वयं काम करते रहे, लेकिन भगवानकी शिक्षाका ठीक महत्व न समझकर हम स्वार्थको बिलकुल भूल गये। प्रातःकाल जब हम अभी सोते रहते हैं संसारकी अनित्यताका गीत गाते हुए भिखारी हमको जगाता है, दिन भर परमार्थके पचड़ेमें पड़े रह कर "मोहिंसम कौन कुटिल खलकामी" गाते हुए हम रात्रिमें शयन करते हैं।

परमार्थ अच्छा है लेकिन स्वार्थके बिना परमार्थ हो कैसे सकता है ।

ऐसी दशामें आवश्यकता थी कि पाश्चात्य देश हमको स्वार्थ सिखलावें और हम उनको पारलौकिक विषयोंकी शिक्षा दें । ताता महोदयने पाश्चात्य देशोंसे उद्योग, धंधेकी बात सीखी । जलसे बिजली निकालकर रुपये पैदा करनेकी युक्ति और उसका व्यापार भारतके लिये बिल्कुल नई बात है । इस देशमें एक खराब प्रथा यह चल गई है कि बेटा बापके चले हुए रास्तेको नहीं छोड़ैगा । नई बात और नये रोजगारको तलाश करना हम जानतेही नहीं हैं । यही कारण है कि एक एक व्यवसायमें बहुत से आदमी लगकर अपनी और दूसरोंकी हानि करते हैं । हमारे अधिकतर व्यवसाय ऐसे हैं जिनमें एक भाई दूसरे भाईका रुपया खींचकर अपनी जेबमें धरता है । ऐसे व्यवसायोंसे देश को कुछ भी फायदा नहीं होता है । ताता महोदयने जितने कारोबार उठाये अपने ढंगके वे सब नये थे, उन सबमें देशका उपकार था । बिजलीकी कम्पनी ताताजीके व्यवसायोंमें सबसे अधिक महत्वकी बात है और इस देशमें पहली चीज है । पहले लोगोंका ख्याल था कि संसारमें चीरापूंजीके बराबर पानी और किसी स्थानमें नहीं बरसता है । लेकिन अनुभवी लोगोंके विचार-से पश्चिमीय घाटपर्वतके मुकाबलेमें चीरापूंजीमें बारिश नहीं होती है । यह अगाध जल बहकर अरब सागरके खारे पानीमें मिल जाता था । कोई इसको काममें लानेवाला नहीं था और न

किसीने इस विषय पर गंभीरतासे विचार किया। विचार भी करता वही जिसमें पूर्ण विद्या, अच्छी सम्पत्ति, विशाल बुद्धि और अतुलनीय अनुभव हो। इस कामके लिये पहलेहीसे महापुरुष जमसेदजी नसरवानजी ताताका जन्म होचुका था।

इंजिनियर मिस्टर डेविड गासलिंगने पहले पहल मिस्टर ताताके चित्तमें यह विचार उत्पन्न किया। मरनेके तीस बरस पहलेसे मिस्टर ताता बराबर इस विषय पर सोचते रहे। लेकिन सन् १८९७ ई० तक सिर्फ विचारही विचार रहा। मिस्टर आर० बी० ज्वायनेर सी० आई० ई० ने जांच करके एक विचार पूर्ण रिपोर्ट तैयार की। दुःखकी बात है कि यह काम ताता महोदयकी जिन्दगीमें शुरू न किया जासका। लेकिन आपके सुयोग्य पुत्रोंने पिताकी अंतिम लालसा पूर्ण करनेके लिये कोई बात उठा न रखी। ऐसे मनस्वी और उद्योगी पुत्रोंकी देशभक्ति और पितृ भक्तिकी प्रतिज्ञा कैसे अपूर्ण रह सकती थी।

सन् १९११ ई० में इमारतकी नींव पड़ी और आशा की जाती थी कि सन् १९१४ ई० तक बिजली तैयार होने लगेगी। इतने बड़े कार्यमें कुछ देर होही जाती है, इसलिये धाराप्रवाह खोलनेका उत्सव तारीख ८ फरवरी सन् १९१५ ई० में हुआ। पहले मालूम होता था कि कम्पनीकी पूंजीके लिये काफी रुपया नहीं मिलेगा। लेकिन हिन्दुस्तानके भीतरही आनन फाननमें २ करोड़ रुपये इकट्ठे हो गये। हर्षकी बात है कि देशी रजवाड़ोंने भी इसमें अच्छी आर्थिक सहायता दी। पानी इकट्ठा करनेका

इतना बड़ा कारोबार शायद दुनियांमें दूसरा नहीं है। इस कारखानेमें पीपेसे इतना पानी निकलता है जितना टेम्स नदीमें ७ महीनोंमें बहता है।

इसमें संदेह नहीं कि इस कारखानेमें हिस्सेदारोंको बहुत अच्छा मुनाफा होगा। लेकिन महज मुनाफेके ख्यालसे न तो तालाने इस कामको उठाया और न बड़े बड़े रजवाड़ोंने रुपये दिये। इन सब लोगोंका मुख्य प्रयोजन था देशोद्धार, बंबईके कारखानोंको बिजलीकी ताकत देकर उनकी तरक्की करना और इस तरह लैंकशायरके मुकाबिलेमें कामयाब रहना। इसके अलावे बंबईको एक फायदा और है। धूएंके स्थानमें बिजली व्यवहार करनेसे शहरकी तंदुरुस्ती भी ठीक रहेगी। पीनेके लिये अच्छा पानी मिल जायगा और ३० या ४० हजार एकड़ जमीन सींचकर तरकारी और फल पैदा किये जासकते हैं। एकही काममें एक साथ इतने अधिक फायदे बहुत कम देखे गये हैं लेकिन ताता हाइड्रो एलेक्ट्रिक पावरसप्लाई कंपनीने ऐसा कर दिखलाया।

हर्षकी बात यह है कि इस कार्य्यको न सिर्फ एक हिन्दुस्तानी सज्जनने उठाया बल्कि कम्पनीकी पूंजी भी हिन्दुस्तानियोंसे मिली है और डिरेक्टर लोग सबके सब हिन्दुस्तानी हैं। ताताजीके सुयोग्य पुत्र सर दोराब ताताने कारखाना खोलते वक्त अपने व्याख्यानमें इस बातको गर्वके साथ दिखलाया था कारखानेमें कई काम साथ साथ किये जाते हैं। वर्षाका पानी

पश्चिमी घाटपहाड़पर जमा किया जाता है। वहांसे पहाड़के नीचे उतारा जाता है। पानीसे बिजली निकाली और बंबई पहुंचाई जाती है। वहां पहुंचने पर विद्युतदेवसे मजदूरोंका काम लिया जाता है। पानी तीन झीलोंमें इकट्ठा होता है। कुल १ लाख २० हजार घोड़ेकी ताकत (Horse Power) तैयार होती है। ३७ कारखानोंने कुल ५० हजार ताकतका ठीका लिया है। आशा है कि दूसरे कारखाने भी इस उद्योगसे लाभ उठावेंगे। कम्पनीके काममें सब तरहसे सफलता होरही है। सन् १६१६ ई० की पहली छमाहीमें खास हिस्सों पर ५ फीसदी मुनाफा दिया गया था। इतने बड़े काममें, इतनी जल्दी इतनी सफलता प्राप्त करना साधारण आदमियोंका काम नहीं है। यह सफलता देख कर निश्चय होता है कि भारतकी कला कारीगरीके उद्धारका यह महान् यत्न सफल होगा। परमात्मा दिन दिन इसकी उन्नति करें।



तीसरा अध्याय।

देशभक्ति और परोपकार।

इसमें संदेह नहीं कि मिस्टर ताताके जीवनका महत्व इस बातमें है कि उन्होंने करोड़ों रुपये अपने बाहु बलसे उत्पन्न किये और ऐसे ढंगसे उत्पन्न किये जिसमें अपने देश और देशवासियो का बड़ा उपकार हुआ। लेकिन इससे भी बढ़कर आपकी बड़ाई इस बातमें थी कि आपने मिहनतका कमाया हुआ धन परोपकार और जाति सेवामें लगाया। जहां व्यवसायमें आपने पानीसे रुपये पैदा किये, वहां देश सेवाके काममें आपने रुपये को पानीकी तरह बहाया।

आपका सबसे पहला परोपकारका काम आपका शिक्षा फंड है। इस देशमें प्राचीनकालमें शिक्षा मुफ्त होती थी। विद्या बेचना पापही नहीं घोर पाप समझा जाता था। विद्यादानसे बढ़कर कोई दान नहीं समझा जाता था, क्योंकि विद्या धनसे बढ़कर कोई धन नहीं माना जाता था। विद्योपार्जनका महत्व तब खूब समझा जाता था। इसीलिये विद्यालयोंके लिये बाहरी टीम टामकी आवश्यकता न थी। अब मामूली देहाती मदरसेके लिये डेढ़ हजारकी इमारत चाहिये, पचास साठ हजारका ठिकाना हो तो ऐंग्लो मिडिल स्कूल चलै, कई लाखमें हाई स्कूलका

हिसाब बैठता है, दस बीस लाखके फंड बिना कालेजका नाम ही लेना पाप है, अगर विश्वविद्यालय खोलना है तो कई करोड़ रुपये भीख मांगने पड़ैंगे। तिसपर भी पढ़ाई न तो अपनी मातृ-भाषामें और न अपनी मातृभूमिकी सेवा सिखानेवाली। विद्या-रंभ करने पर पहले दरजेकी पहली किताबके पहले पाठके दो वाक्य रत्न मुझे अब तक याद हैं। उनमेंसे एक तो था "अंगरेज बड़े बहादुर होते हैं" और दूसरा था "गद्हा बड़ा गरीब जानवर है।" हाई स्कूलके सबसे बड़े दरजेमें पहुंचकर मैंने पढ़ा था— "Codes of Manu are simple and rude but not cruel." मनुके कानून सादे और रूखे हैं लेकिन बेरहम नहीं हैं। कालेज क्लासोंमें शेक्सपियरके डाइन और भूत प्रेतोंकी शिक्षा बड़ी गंभीरतासे दी जाती है। अंतमें जीवनके २४ या २५ वर्ष स्वाहा करके किसी तरह डिप्लोमा मिलता है। जब बैठकर सोचते हैं तो हृदय हताश होजाता है। हमने सीखा क्या? क्या वेदोंके तत्वोंको कुछ भी समझ पाया, पुराणोंके महत्वका नाम मात्रको भी ज्ञान हुआ, षड् दर्शनोंमें क्या एकके भी दर्शन हुए, आवागमन और कर्मके सिद्धांतोंसे क्या कुछ परिचय हुआ, आध्यात्मिक शिक्षा कितनी मिली और जीवात्मा परमात्माके रूपका दर्शन हुआ या नहीं, गार्हस्थ्य जीवनमें प्रवेश करनेके पहले उपयुक्त शारीरिक बल प्राप्त किया या नहीं, कृषी विद्याके किसी नये आविष्कार द्वारा क्या हमने देशके कृषकोंको कुछ लाभ पहुंचाया, कारीगरोंके किसी रहस्यको समझकर क्या देशके व्यवसायको

हमने समुन्नत किया, सदाचारके किसी उच्च आदर्शको क्या हमने देशके बच्चोंके सामने रखा? सबके जवाबमें एक साथही "नहीं" कहना पड़ता है। फिर हमने किया क्या और सीखा क्या? हमने अपनी तंदुरुस्ती और मा बापके रुपयोंका नाश किया, सीखा सिगरेट पीना ओर अकड़बेगी चाल चलना।

आर्थिक लाभकी यह दशा है कि घरवालोंसे ५०) मासिक खाकर बी० ए० पासको अगर ५०) की नौकरी मिल जाती है तो गनीमत समझते हैं। इतनेमें क्या खायं, क्या अपनी पोशाक और शौकीनीमें खर्च करैं, क्या माता पिताके चरणों पर अर्पण करैं, बड़े भाईकी विधवा और अनाथ बच्चोंको क्या सहायता दें, स्त्रीके लिये कितनेमें क्या गहना बनवावैं, पुत्रकी शिक्षाके लिये कितने माहवारमें काम चलैगा, समाचार पत्र और पत्रिकाओंके साल पूरे हो गये हैं, उनके वैल्यूपेबुल डाकखानेमें पड़े हैं, अपनी बनाई तीन चार पुस्तकें पड़ी हुई हैं उनके छपानेके लिये भी थोड़ा धन जोड़ना होगा, जिन जिन सभा सोसाइटियोंके मेम्बर हैं उनके मुलायम तकाजे कई आ चुके हैं अब चंदा न जानेपर सभा-भवनमें नाम टांगकर नादिहंदोंकी फिहरिस्तमें भरती करके हम पदच्युत कर दिये जायंगे, इधर हैदराबादकी बाढ़में कुछ भेजना है, गुजरातके दुकाल और बंगालके दुर्भिक्षमें कुछ न कुछ भेजना ही पड़ैगा, इधर नये डी० ए० वी० कालेजकी अपील छपी है उसमें हाथ बटाना धार्मिक कर्तव्य है, गांवमें जो सरस्वती सदन खोला है उसमें अभी सौ से कम पुस्तकें हैं, अपनी अछूत

पाठशाला भी बड़ी हीनावस्थामें है, तब तक कितने ही नवयुवक हिन्दू-युनिवर्सिटीका चंदा मांगनेके लिये पंहुच गये, इधर युद्ध-ऋणमें जी खोलकर देना अपना सबसे प्रथम कर्त्तव्य है। रुपये पचास और झगड़े इतने। कभी कभी सोचते हैं, कि कहांसे जान लेनेवाली नाम मात्रकी उच्च शिक्षाके पचड़ेमें पड़े। अगर अपने खेतोंको मिहनत करके जोतते तो क्या वे कुछ फल नहीं देते। परती जमीनमें अगर छोटा मोटा बाग लगा देते तो उसीमें कितना मिलता, गांवमें अगर किरानेकी दूकान खोलदेते तो भी खासी आमदनी होती, तीन चार गाय भैंस पाल लेते तो फिर दूध दही भी खाने को मिलता और नकद रुपये भी मिलते। अगर नौकरी ही करनी थी तो इस तरह अंगरेजी पढ़ कर हरलोक परलोक बिगाड़नेसे क्या काम निकला? मुदर्रिसी कर ली होती तो कितना आनंद होता! हाथमें छड़ी लेकर कुर्सीपर डट जाते। अगर मुमकिन होता तो छोटी सी घड़ी ताख पर टिकटिकाती रहती। अब सरकारी स्कूलोंमें तन्ख्वाह भी ८) माहवारसे कम नहीं है, अगर अपने गांवका मदरसा मिल जाता तो फिर कहना ही क्या था। अगर दूर भी फेंके जायंगे तब भी ईश्वरने शरीरमें ताकत दी है। हाथमें जूते लेकर दिनमें २० कोस चला जाना कठिन नहीं है। अगर मदरसेके साथ डाकखाना या मवेशीखाना मिल गया तो फिर पूछना ही क्या है। अगर हिसाब कमजोर होनेकी वजहसे मिडिल न भी पास कर सकते तोभी वैक्सीनेटरी कहां जाती। मेरे ख्यालमें इसके मुका-

बिलेकी दूसरी कोई नौकरी नहीं है। आपही बतलावैं कि और किस नौकरीमें छः महीने काम करके १२ महीनेकी तनख्वाह मिलती है। कभी कभी हम सोचते हैं कि शायद विलायत हो आने पर काम चलै। इसलिये समुद्र यात्राकी जाती है। इस विदेश यात्राके श्री गणेशके साथ पहला काम जो हम करते हैं वह भेष बदलना है। हिन्दुस्थानमें मरदानगी की मुख्य शोभा मूछें हैं। सबसे पहले उन्हीं पर हाथ साफ होता है। अपनी कौमी पोशाकोंका भी अलविदा हुआ, शकल देखकर न आप हमको रामकी संतान कह सकते हैं और न सुग्रीव और जामवंत के वंशज। जहाज पर पैर रखनेके पहलेही दिन भोजनका प्रश्न उठता हैं। कहां तो अपनी सालीकी भी बनाई हुई, दूध की मांड़ी हुई घीकी पूड़ी नहीं खाते थे कहां अब विधर्मियोंके हाथके हाड़ मांस शोणित संयुक्त भोजनका भोग लगाना पड़ता है। अगर सभ्यताके रोबमें आगये तो सभी कुछ उदरस्थ कर गये। लेकिन धर्मका कुछ ध्यान हुआ तो निरामिष भोज्यकी आज्ञा हुई। लेकिन क्या उस पवित्र भोजनागारमें कोई भी वस्तु मांसके संसर्गसे बची है। चावलके दाने दानेमें, आलूके टुकड़े टुकड़ेमें चरबी वैसेही अप्रत्यक्ष रूपसे मिली हुई है, जैसे दूधमे घी, जैसे तिलमें तेल, जैसे गुसाईं तुलसीदासकी कवितामे भगवद्भक्ति। अदन बंदरगाह पहुंचते पहुंचते हमारे जातीय धर्मको काफी धक्का लग चुकता है और हम उपर्युक्त भ्रष्ट जीवनमें अभ्यस्त हो जाते हैं। युरोप निवासके समय तो हम

मालूम नहीं क्या क्या खाडालते हैं, मालूम नहीं अपनी आर्य्य सभ्यता और आर्य्य सदाचारको किस दरजे तक गिराते हैं।

इतना जानते हुए भी हमारे विद्वाननेता और देशहितैषी लोग क्यों आपको विलायत जानेकी अनुमति देते हैं। इसका कारण यह है कि विलायती जीवन जहां हमारे धार्मिक आदर्शों को धक्का पहुंचाता है वहां विलायत यात्रा हमारी राजनैतिक कठिनाइयोंको—यदि हम समझसे काम लें तो हल करती है। जैसे वैद्य अवसर पड़ने पर शोधन करके दवामें उचित मात्रासे विषका प्रयोग कर रोगीका कल्याण करता है, वैसे ही केवल सुधरे हुए और मर्यादाके भीतर रहनेवाले नव युवकोंको विलायत जाना चाहिये, ताकि वे बुराइयोंके शिकार बन अपने अमूल्य जीवन का नाशकर हमारे जातीय हितको हानि न पहुंचावें। विद्वान, देश भक्त और दूरदर्शी ताताने सोचा कि गरीब लड़के प्रायः परिश्रमी और सदाचारी होते हैं। अगर उनका धनाभाव दूर कर उनको विदेशोंमें भेजा जाय तो वे बड़ा काम करेंगे।

इसी विचारसे आपने फंड कायम किया जिससे विदेश जानेवाले गरीब विद्यार्थियोंकी सहायताकी जाय। मैट्रिकुलेशन तथा उसके ऊपरकी परीक्षा पास किये हुए विद्यार्थी इसके लिये निवेदन कर सकते हैं। सिविल सर्विस, डाक्टरी, साहित्य और सांइस इत्यादि विषयोंके पढ़नेके लिये यह सहायता दी जाती है। फंडकी कमेटी सहायता प्राप्त विद्यार्थियोंके पठन पाठनकी निग-रानी रखती है। काहिली या और किसी दुर्व्यसनमें पड़नेपर

विद्यार्थीकी सहायता रोक दीजाती है और ४ फीसदी सूद जोड़ कर रुपया फौरन वापस करना पड़ता है। जब विद्यार्थी पास होकर रुपया कमाने लगता है, वादेके मुताबिक मै सूद उसको एक मुश्त या किश्तवार कर्जा अदा करना पड़ता है। सहायता पानेके लिये कमेटीके मंत्रीके नाम नवसारी बिल्डिंग्स, फोर्ट, बंबई के पते पर अप्रैलके महीनेमें दरख्वास्त भेजनी चाहिये।

इस फंडकी स्थापना सन् १८९२ ई० में हुई थी। पहले सिर्फ पारसी इससे फायदा उठा सकते थे लेकिन सन् १८९४-१८९५ ई०में नियम इतने उदार बनादिये गये कि हर एक हिन्दुस्थानी मदद लेसकता है। अब तक ३८ सज्जनोंने इससे फायदा उठाया है जिनमें २३ पारसी और १५ दूसरे लोग हैं। इनमे कुछ लोग सिविल सर्विसवाले हैं, कुछ डाक्टर, कुछ इंजीनियर और बाकी लोग दुसरे मुहकमोंमें हैं।

इसके बाद भी ताता महोदयने अनेक परोपकारके काम किये। वैसे तो इनका प्रत्येक कल कारखाना, इनका हर एक उद्योग, देशभक्ति और परोपकारके भावसे प्रेरित थे, लेकिन इनकी देश भक्तिका अतुलनीय काम था इनका रिसर्च इन्स्टीट्यूट। शिक्षा फंडके संबंधमें आपने देखा है कि किस तरह ताताजीने होनहार नवयुवकोंको विलायत भेजकर देशहित किया है। अनुभवी ताताने सोचा कि इस गरीब देशमें बहुत थोड़े युवक सहायता पानेपर भी विलायत जा सकते हैं। तिसपर बिरादरीका झगड़ा और विद्यार्थियोंके खुद बिगड़ जानेका डर। इन सब बातोंको

सोच विचार कर आपने एक ऐसे विद्यालयके खोलनेका विचार किया जहां थोड़े खर्चमें घर रहते हुए विद्यार्थी वे बातें सीखजायं जिनके लिये वे हजारों मील दूर जाकर अपना तन, मन, धन खर्च कर अनजान होनेकी वजहसे इधर उधर ठोकरें खाकर अपमानित और निरुत्साहित होते हैं। विद्यालयकी स्थापना पर विचार करनेके लिये बड़े बड़े विद्वानोंकी एक कमेटी बनाई गई। कमेटीके मंत्री मिस्टर बरजोरजी पादशा पाश्चात्य युनिवर्सिटियोंके देखनेके लिये तैनात किये गये। तखमीना किया गया कि ३० लाख रुपयेोंमें काम शुरू हो सकता है।

सन् १८९८ ई० में स्कीम लार्ड कर्जन साहबके सामने पेश हुई। सबसे पहले स्थानका झगड़ा तै करना था। ताताजी बंबईको पसंद करते थे और कितने अन्य लोग कई दूसरे स्थानोंको पसंद करते थे। अंतमें मद्रास सूबेका बंगलोर स्थान पसंद हुआ। इसके बाद मैसूर राज्यकी सहायताके लिये लिखा पढ़ी की गई। कमेटीने रातदिन जी जानसे कोशिशकी, लेकिन बहुत दिनोंतक लार्ड कर्जन महोदयकी कृपासे काम शुरू न हो सका।

कई सालके बाद महाराज मैसूरने ५ लाखका दान किया। इसके अलावे मैसूर राज्यने ३७१ एकड़ जमीन भी दी। इसके लिये राज्यके दीवान भारतमाताके सपूत सर शेषाद्रि ऐयरकी जितनी प्रशंसाकी जाय थोड़ी है। हर्षकी बात है कि अंगरेजी सरकारने भी ४ लाख रुपये देकर अपनी उदारता दिखलाई। मैसूरने दस बरसके लिये ३० हजार रुपये सालाना मंजूर किया

और बादमें हमेशाके लिये ५० हजार रुपये साल कर दिये गये। भारत सरकारने भी ३० हजार रुपये साल मंजूर किये। अब आशा थी कि काम बहुत जल्द शुरू होजायगा। लेकिन ताता महोदयकी अकाल मृत्युने कुछ दिनोंके लिये रुकावट डाल दी। साधारण अवस्थामें तो कामही छोड़ दिया गया होता लेकिन ताताजीके सुयोग्य लड़के और कमेटीके सदस्य कमजोर आत्माके आदमी नहीं थे। इसलिये स्कीम फिरसे हाथमें ली गई। इमारतें करीब करीब सब तैयार होगईं। पढ़ाई भी शुरू होगई। ग्रैजुयेट होनेके बादकी उच्च विज्ञान शिक्षासे हमारे युवक लाभ उठा रहे हैं। परमात्मा इस संस्थाकी दिन दिन उन्नति करै।

कुछ लोगोंका विचार है कि ताताजीने कलाकौशल और रोजगारको छोड़कर और किसी मार्गसे देशकी सेवा नहीं की है। भगवानने गीतामें कहा है कि स्थिर चित्तसे एक लक्ष्य बना कर काम करना चाहिये। अनेक कामोंपर अपना मन डांवाडोल करनेवाला आदमी एक भी काम अच्छी तरह नहीं कर पाता है। इसी नियमानुसार ताताजीने कलाकौशलको अपना मुख्य उद्देश्य बना लिया। उस मुख्य कर्तव्यके पालनके बाद जो समय बचता था उसको आप राजनीति तथा दूसरे कामोंमें लगाते थे। बजट, रेलवे इत्यादि आय व्यय संबंधी विषयोंका आपको बहुत अच्छा अनुभव था। टकसालके विषयमें सन् १८९२ ई० में जो आंदोलन हुआ था उसमें ताताजीने बड़ी योग्यता दिखलाई थी।

सन् १६००-१६०१ में उन्होंने एक बंदोबस्त संबंधी विषय पर थानाके कलक्टरका बड़ी जोरसे प्रतिवाद किया था।

खेतीकी बाबत भी मिस्टर ताताको अच्छी वाकफियत थी। रूई और रेशमकी कृषीमें तो आप बड़ेही होशियार थे। आपने रूईकी खेतीके सुधारनेका जो यत्न किया था वह पहले बतलाया जा चुका है। रेशमकी खेतीके लिये भी आपने लोगोंको बहुत उत्साहित किया। आपने अपनी जापान यात्रामें जो अनुभव प्राप्त किये थे उनका प्रचार किया।

आपने खुद अपनी नवसारीकी वाटिकामें रेशमके कीड़े पाले थे।

आपने अपनी यात्रामें मालूम किया कि चीन और जापानकी खेती और सिंचाईके ढंग हमारे ढंगोंसे बहुत अच्छे हैं। वहांके किसान हमसे अधिक बुद्धिमान और मिहनती होते हैं। थोड़े खर्चमें पुरानी रीति पर उन्होंने नयेसे नये वैज्ञानिक औजार बना डाले हैं। ताता चाहते थे कि उन सस्ते उपायोंका इस गरीब देशमें प्रचार हो लेकिन यहां कौन आपकी बात सुनता था!

टेंपरेंसके कामोंमें सदा आपकी सहानुभूति रहती थी। बंबई गवर्नमेंटकी आबकारी नीतिके विरोध करनेमें आपने माननीय वाचाजीका साथ दिया था।

हिन्दुस्तानकी गरीबीके बारेमें आपकी वही राय थी जो स्वर्गीय पितामह दादा भाई नौरोजीकी थी। राजनैतिक मामलों

में आपके विचार ऊंचे थे । और सबसे बढ़कर अच्छी बात तो यह थी कि आप उनके जाहिर करनेमें डरते नहीं थे। स्वर्गीय सर फ़िरोजशाह मेहता ताताके जीवनके अद्वितीय जानकार थे। ताताजीकी मूर्त्ति खोलनेके उत्सव पर मेहताजीने कहा था कि "यह गलत फहमी फैली हुई है कि ताताजी सार्वजनिक जीवन में भाग नहीं लेते थे और न देशकी राजनैतिक अवस्थामें सहायता देते थे। दूसरा कोई आदमी ऐसा नहीं था जिसके राजनैतिक विचार ताताजीसे अधिक जोरदार हों। गोकि प्लेटफार्म पर खड़े होकर बोलनेके लिये आप राजी नहीं किये जा सके। लेकिन आपकी सहायता और सहानुभूति सदा मिलती रहती थी। आप बम्बे प्रेसिडेंसी एसोशियेशनके स्थापित करनेवाले मैंबरोंमें से थे। इतनाही नहीं, आपने अपने बूढ़े बापको भी उसमें शरीक होनेके लिये राजी कर लिया था। कांग्रेसके साथ सदा आपका प्रेम था और अकसर मौकों पर आपने धनसे उसकी सहायताकी थी। इसमें कोई अचंभेकी बात नहीं है कि आप ऐसा करते थे। ताज्जुब तो तब होता जब आप राजनीति से अलग रहते।"

राजनैतिक सुविधाओंके बिना औद्योगिक, सामाजिक तथा धार्मिक सुधार हो ही नहीं सकते हैं। जो नित्य काला और काफिर कहकर पुकारा जायगा उसका हताश हृदय न तो हौसलेसे कोई रोजगार कर सकता है, न उसका खिन्न चित्त किसी उच्च सामाजिक आदर्शको अपने सामने रख सकता है और न

उसका दुखी मन प्राणायाम ही कर सकता है। सुविधायें होनेसे चित्तकी अशांति मिटती है। अशांति मिटनेसे मन स्थिर होता है, जिससे इहलोक परलोक दोनों बनता है।

चौथा अध्याय।

स्वर्गारोहण।

संसार चक्र बराबर चलता रहता है। जो बातें पहले देखी गई थीं वे आज नहीं दिखाई पड़ती हैं, जो आज हैं वे आगामी दिन परिवर्तित रूपमें मिलैंगी। गंगाकी तरंगोंमें जो वारिबुंद उस दिन गंगोत्री पर पतली धारामें अठखेलियां करते थे वे हरद्वारमें हरकी पैड़ीके पास कलोलें करते पाये गये। उन्हींको थोड़े दिन बाद काशी मणिकर्णिका घाट पर जीवन मरणके गंभीर विचारमें आपने मग्न देखा था। अब वे कहां हैं ? सबके पाप दोष धोकर, हमारे हृदयकी कालिमाको लेकर नील शोभा धारण करते हुए समुद्रकी गोदमें खेल रहे हैं। मनुष्यकी भी यही दशा है। बाल्यावस्थामें हम नन्हेसे थे फिर किशोर होकर कर्मण्यता दिखलाई, अंतमें स्मशानकी अग्निमें भस्मस्नान करके नहीं, स्वयं भस्म होकर हम कृपा वारिधिकी पवित्र शरणमें लीन होते हैं। मिलकर एक होजाते हैं। हम भगवानसे मिल जाते हैं। आत्मा और परमात्माका भेद मिट जाता है।

अर्जुनने इसीके लिये कहा है।

"यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।
तथा तवामी नरलोक वीराः
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।

भगवानके अनेक मुखोंमें हम वैसे ही घुसते हैं जैसे नदियां समुद्रमें प्रवेश करती हैं। वनोंमें बहती, पर्वतोंपर टकराती, गह्वरोंमें गरगराती, झरनोंमें झरती सरिताओंका यही अंतिम उद्देश्य है कि वे समुद्रमें मिल जायं, मिलकर एक हो जायं। मरमर कर, एक एक बूंद जिसके लिये जोड़ी थी उसकी थाती उसको सौंप दी, सरका बोझ हलका हो गया, आप खुद भी हलकी होकर हवाकी झोकोंपर इधर उधर लहराने लगी।

हम भी रोज मरते, पटकते और काम करते रहते हैं जिसमें मालिक खुश हो और प्रसन्न होकर हमको अपने दरबारमें बुला ले। मालिक दयावान है, हमको अपनी शरणमें, अपने चरणोंमें अवश्य स्थान देगा। लेकिन हमको देख लेना चाहिये कि कहीं सुस्तीसे काम अधूरा न छूट जाय, नहीं तो डांट पड़ना अलग रहा, वही काम करनेके लिये हम वारवार लौटाये जायंगे।

लेकिन जो कर्मवीर हैं, जिनने अपना सारा जीवन काम करते करते बिताया है, काम भी ऐसे जिनसे संसारका उपकार, दीनोंका उद्धार, सत्य और सदाचारका प्रचार, विद्याका विस्तार और मातृभूमि की उन्नति हुई है, उनके लिये मृत्युका

क्या डर है! वे आनंदसे प्रत्येक स्थानमें मरनेको तैयार रहते हैं।

जिसने कर्मपथके यात्रियोंको मार्ग दिखाया, अंधेरेमें भटकते हुएके लिये प्रकाश किया, सिसकते हुएका आंसू पोंछा, कराहते हुएको कलेजेसे लगाया, डूबते हुएको निकालकर बाहर खड़ा किया, सोते हुएको सचेत किया, जागते हुएको बैठाया, बैठेको खड़ा किया, खड़ेको चलाया, चलते हुएको कार्य्यमें सन्नद्ध किया ऐसे ही लोगोंका जीना और मरना धन्य है। हमारे चरित्र नायक महाशय जमसेदजी नसरवानजी ताता ऐसे ही महापुरुषोंमें थे। आपने इस छोटीसी पुस्तकमें देखा है कि ताताने एक साधारण पारसी कुलमें जन्म ग्रहण किया था और अपने लड़कपन हीसे किस परिश्रमसे काम करते हुए असंख्य धन जोड़कर उसको किस तरह परोपकारमें लगाया।

ऐसे लोग हर घड़ी मृत्युका स्वागत करते हैं। हम चाहते थे कि ऐसे महापुरुष और कुछ दिन तक हमको जगाते रहैं, उठाते रहैं, हमको कर्म पथपर चलाते रहैं। लेकिन परमात्मा हमारी रायसे काम नहीं करता है, वह न्यायशील, दयासागर सच्चिदानन्द जो अच्छा समझता है वही करता है। अंतमें हमको मालूम हो जाता है जो हमने सोचा था वह बात गलत थी, परम पिताने जो कुछ किया है अच्छेके लिये किया है, जो कुछ करता है हमारी भलाईके लिये करता है, सदा वह हमारा हित करेगा। अगर हम इस सिद्धांतको अच्छी तरह समझ लें,

समझकर हृदयमें धारण कर लें तो हमारे बहुत कुछ रोग, शोक, संताप मिट जायं।

हमको अपने पैरोंपर खड़ा करनेके लिये, आत्मनिर्भरता सिखानेके लिये, शायद परमात्माने आवश्यक समझा कि वह कुछ दिनोंके लिये मिस्टर ताताको अपने पास बुलालें।

इस देशकी दशा देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता है कि ताताजीकी असमय और अकालमृत्यु हुई। यों तो हमारी प्रार्थनामें कहा जाता है "जीवेम शरदःशतम्" लेकिन कितने लोग सौ बरस तक जीते हैं!

सब कुछ होते हुए भी समय पड़ने पर हम धैर्य्य छोड़ देते हैं।

सन १९०३ ई० के अंतमें ताताजी बीमार पड़े। डाक्टरोंकी रायसे जल वायु बदलनेके लिये आप युरोप गये। जनवरी सन् १९०४ ई० में आप बंबईसे रवाना हुए। उसी सन्के मार्चमें आपकी स्त्रीका देहांत होगया। इससे आपको बड़ी चोट पहुंची। कुछ ही दिनके बाद तारीख १९ मईको जर्मनी देशके एक नगरमें आपका देहांत होगया। आपके ज्येष्ठ पुत्र सर दोराब ताता आपकी मृत्यु शय्याके पास मौजूद थे।

आपकी मृत्युका समाचार देश भरमें बिजलीकी तरह फैल गया। समग्र देश शोक सागरमें डूबने उतराने लगा। गरीब, दानवीर ताताके दानका स्मरण करने लगे, कलाकुशल कारीगर और व्यापारी, कर्मवीर ताताकी व्यवसाय चातुरीका

ध्यान करने लगे। शिक्षाप्रेमी आपके अधूरे रिसर्च इन्स्टीट्यूट-को देखकर हताश होने लगे, देश भक्त आपके स्वदेश प्रेमको समझ समझकर पछताने लगे। सबने अपने मनमें सोचा कि इस आंदोलनके समयमें लेखक और व्याख्यान दाता बहुतसे होंगे, देशके लिये अपना सर्वस्व बलिदान करनेवाले भी होंगे। राजनैतिक संसारमें बड़े बड़े देशोंके दांत खट्टे करने वाले भी कितने ही निकले थे, लेकिन इतना बड़ा व्यवसायी देशकी कारी-गरीका इतना बड़ा उद्धारकर्त्ता जल्द न मिलेगा।

बंबईके प्रसिद्ध आदमियोंकी ओरसे टाउनहालमें एक मीटिंग हुई। छोटे बड़े सब शरीक हुए थे। गवर्नर लार्ड लैमिंगटन सभापतिके आसन पर विराजमान थे। मुख्य वक्ता थे प्रजा-प्रिय चीफ जास्टिस सर लारेंस जेंकिंस। आपका व्याख्यान बड़ा ही ओज पूर्ण और हृदय ग्राही था। आपने उचित शब्दों में ताता महोदयके अतुलनीय गुणोंका वर्णन किया। दान, कलाकुशलता, व्यवसायपटुता, देशभक्ति आदि गुणोंका वर्णन करते हुए आपने बतलाया कि मिस्टर तातामें सादगी हद दरजेकी थी। इसके साथ साथ सदाचार, निरभिमान और निर्लोभने आपका स्थान और भी ऊंचा बना दिया था।

मिस्टर ताताने कर्तव्य हीको अपने जीवनका आदर्श बनाया था। आदर और मानकी तलाशमें आप कभी नहीं गये, वे स्वयं इनकी खोजमें लगे रहे। जेंकिंस साहब ताता जीके अंतरंग मित्र थे। अपने तजरबेसे आपने बतलाया कि जहां ताता जीका

सार्वजनिक जीवन सफलता और उपकार पूर्ण था वहां निजी जीवनमें भी आप बड़े ही सर्वप्रिय थे। आपके साथका आनंद वे ही लोग जानते हैं जिनको सौभाग्यसे वह सुख प्राप्त हुआ था। भोजनके समय आप अपनी आनंदवार्ता और विनोद-पूर्ण कहानियोंसे सबको प्रसन्न करते रहते थे। अपनी जापान यात्राके बाद आप सदा जापानियोंकी प्रशंसा किया करते थे।

जेंकिंस साहबने बहुत ठीक कहा है कि ताताजी काम करने वाले आदमी थे। सूखे कुएंमें खाली डोल डालनेके आप पक्षपाती नहीं थे। लेक्चर देनेकी आदत आपमें नहीं थी। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि आपमें भाषण शक्ति नहीं थी। सर फिरोजशाहमेहताके आग्रह पर आप एक दफा बोले थे जिससे पता चलता है कि अगर आप वक्ता बनना चाहते तो आपका स्थान इस देशके व्याख्यान दाताओंमें बहुत ऊंचा होता। लेकिन आप तो दूसरे और विशेष महत्वके कामोंके लिये बनाये गये थे।

जेंकिंस साहबने अंतमें कहा कि जहां ताताने बड़ेसे बड़े काम उठाये, वहां उद्योग और सदाचारके छोटेसे छोटे काममें भी आपकी सहानुभूति रहती थी, आपसे सहायता मिलती थी।

लार्ड लैमिंगटन महोदयने भी ताताजी की मुक्तकंठसे प्रशंसा की। आपने कहा कि ताताजीका सबसे बड़ा गुण था उनका व्यवसाय पूर्ण परोपकार। इस बातमें आपका मुकाबिला करने-वाला हिन्दुस्तानमें दूसरा आदमी अभीतक नहीं पैदा हुआ।

लाट साहबकी रायमें ताताजीमें दूसरी खास बात थी सादगी। अपने धनको आपने अपनी शान शौकमें न लगाकर सदा परोपकार और व्यवसायमें लगाया।

जस्टिस तैयबजीने ताताजीके प्रति आदर और प्रेम दिखलाते हुए आपके अनेक गुणोंकी प्रशंसाकी। आपने एक फारसी कवि के निम्नलिखित वचनको उद्धृत किया "ऐ मुसलमान ! मुझे क्या करना है ? मैं खुद अपनेको नहीं पहचानता हूं। मैं न तो इसाई हूं, न यहूदी और न मुसलमान। मैं न तो पूरब का हूं और न पश्चिमका। मैं न तो ईरानसे आरहा हूं और न खुरासान से" तैयबजीने कहा कि कविने कहा है कि न वह पूरबका है और न पश्चिमका, लेकिन ताता महोदयने अपने कामोंसे दिखला दिया है कि वे पूरब और पश्चिम दोनोंके थे। अपने व्यवसाय, अपने परोपकार, अपनी उदारता और अपने दानके कारण ताताजी पूरब और पश्चिम दोनोंके आदमी कहला सकते हैं, मुसलमान भी कहे जासकते हैं और पारसी भी कहला सकते हैं। अपने सादे किंतु प्रभावशाली और दयापूर्ण जीवनके कारण आप मुसलमान हिंदू और पारसी सब कुछ कहे जासकते हैं। हिन्दुस्तानके हर सूबेके लोग आपको प्यार करते थे, आपका आदर करते थे। मिस्टर ताताके चरित्रका ठीक पता उनके रिसर्च इन्स्टीट्यूटसे लगता है। इससे न सिर्फ उनकी उदारता मालूम होती है बल्कि आपकी कल्पना शक्तिका भी पता लगता है। सर भालचंद्रकृष्णने कहा कि ताताजीकी मृत्युसे सारा

भारतवर्ष दुखी है। आपने कहा कि तातामें खास बात यह थी कि वे जिस कामको करते थे अच्छी तरहसे करते थे। आप जिस कामको उठाते थे विघ्नोंकी परवाह न करके आगे बढ़ते जाते थे। और जबतक कार्य्य सिद्ध नहीं होता था रुकते नहीं थे। आपने भी बतलाया कि मिस्टर ताताके सब कामोंमें उनका रिसर्च-इन्स्टीट्यूट प्रधान है।

रेवरेंड डाक्टर मैकीकनने एक सारगर्भित व्याख्यानमें ताता स्मारक बनवानेका प्रस्ताव पेश किया। आपने कहा कि ताता-जीके स्मारककी आवश्यकता इसलिये नहीं है कि उन्होंने अपार धन पैदा किया बल्कि इसलिये है कि आपने धनका बहुत अच्छा उपयोग किया। ताताको भारतवर्षके औद्योगिक भविष्यमें बड़ा विश्वास था। बहुतसे लोग ख्याल करते हैं कि हिन्दुस्तान कला-कौशलमें संसारके बड़े बड़े देशोंका मुकाबिला नहीं कर सकता है। उनका निर्बल हृदय समझता है कि हमारा देश मर मरकर कच्चा माल पैदा करनेके लिये बनाया गया है और लैंकशायर और मैंचेस्टर उसको लेकर हमारी आंखोंमें धूल झोंककर, हमारे रक्तके कमाये पैसोंसे घर भरनेके लिये हैं। उनको डर है कि शायद हमेशा हमको विलायती कपड़े, जर्मनीकी पैंसल, तथा जापान और नारवेकी दियासलाई खरीदनी पड़ै।

लेकिन ताताजी ऐसे लोगोंमें नहीं थे। आपका ख्याल था कि कोई वजह नहीं है कि जो काम दूसरे लोग कर सकैं हम न कर सकैं। स्वर्गीय मिस्टर ताताको चाहे हम व्यवसायी आदमी

की हैसियतमें लें, या एक दानवीर सज्जनके रूपमें उनको देखें, एक बात सब जगह मिलेगी। ताताके जीवनका प्रधान गुण यह था कि उनके ख्यालात सदा ऊंचे रहते थे। संसारसे ऊंचेसे ऊंचे विचार आपके चित्तको आकर्षित करते रहते थे। यह कहा जाता है कि मिस्टर ताताका दिमाग ख्यालातोंसे भरा रहता था। ठीक बात तो यह है कि उनका मस्तिष्क हृदय उमगानेवाले आदर्शोंसे पूर्ण रहता था। इससे भी ठीक यह बात होगी कि मिस्टर ताता स्वप्न देखनेवाले आदमी थे। इसमें शक नहीं कि ख्याली पुलाव बेवकूफ आदमी पकाते हैं। लेकिन बेवकूफोंके ख्यालात उनके मनमें पैदा होकर वहीं मर जाते हैं। विचारको कामके रूपमें बदलना उनकी शक्तिके बाहर है। विचारवान आदमी अपने स्वप्नको कार्य्य रूपमें कर दिखलाता है। अगर वह कभी नाकामयाब भी रहता है तो भी उसके उद्योग और परिश्रमसे संसारके दूसरे लोगोंको नसीहत मिलती है। ताताजीमें खास बात यह थी कि वे अपने स्वप्नको स्वप्न नहीं रहने देते थे। उनके विचार कार्य्य रूपमें परिवर्तित होजाते थे।

ताताजीका बड़ा भारी गुण यह था कि वे सदा व्यवसायमें आध्यात्मिक भाव ला देते थे। आपने अपने इस गुणके कारण कलाकौशल और व्यवसायको साहित्यका स्थान देदिया था। इस देशके बहुतसे लोग समझते थे कि कारीगरी हाथकी चीज है और कलाकौशल रूखा व्यवसाय है। लेकिन ताताजीने अपने चरित्रसे दिखला दिया कि सच्ची कारीगरी दिमागके विना हो ही

नहीं सकती है। हमारे अधःपतनका मुख्य कारण यह है कि हम अपने व्यवसायको प्रेमसे, हंसते हुए, हौसला भरे दिलसे नहीं चलाते हैं।

इस देशमें कई तरहके दान प्रचलित हैं, कुछ लोग तो अपना नाम करनेके लिये दान करते हैं, कुछ लोग आंख मूंदकर आलसी लोगोंको भोजन करानाही दान समझते हैं, कुछ ऐसे सज्जन हैं कि वे दीन दुखियोंके दुःख दूर करनेके लिये उनको अन्न वस्त्र देते हैं।

लेकिन ताताजीका दान इन सबसे निराले ढंगका था। अगर कोई ताताजीसे पूछता तो वे कहते कि यह व्यवसाय है, दान नहीं। बात सच है, लेकिन इस तरहका व्यवसायही सच्चा दान कहला सकता है। आपके दान आपके देशवासियोंको परिश्रमी और सदाचारी बनाते हुए उनके दिलको हौसलेसे भर देते थे। इस देशके निर्जीव और उत्साह हीन निवासियोंके लिये इससे बढ़कर और क्या उपकार होसकता है!

कुछ लोग पूछते हैं कि रिसर्च इन्स्टीट्यूटसे क्या फायदा है। शिक्षा आरंभ होनेके पहले भी इस संस्थासे बड़ा लाभ हुआ है। इसने देशके शिक्षित लोगोंको जगा दिया है। इसके कारण हमारे पढ़े लिखे लोगोंमें उत्साह जाग उठा है। वे अपने पूर्वजोंके 'सादी रहनी ऊंची करनी' आदर्श पर चलते हुए, आराम-तलबी पर लात मारते हुए, परिश्रमसे जीवन बिताते हुए, साधारण भोजनपर जीवन व्यतीत करते हुए खोजका काम करेंगे।

एक ग्रैजुयेट तहसील्दारने सर नारायण चंदावरकरको लिखा था कि वह अपने जीवनकी कमाई १० हजार रुपये इन्स्टीट्यूट को दान करके नौकरी छोड़कर वहां शिक्षा ग्रहण करेगा।

इससे आप देख सकते हैं कि रिसर्च इन्स्टीट्यूटका लोगों पर कितना प्रभाव पड़ा है।

ताता महोदयके बनवाये हुए आदर्श मकानोंके देखनेसे कितनी सफाई टपकती है और उनसे कितनी शिक्षा मिलती है।

सच बात तो यह है कि इस महात्माके प्रत्येक काम, उसकी बातचीत, उसका साथ, सब हमलोगोंको उच्च जीवनकी शिक्षा देते थे। सबसे बड़ा काम जो आपने किया वह यह है कि हममें आत्मविश्वासका भाव जागृत कर दिया। हमको प्रेमपूर्ण सच्चा जीवन सिखला दिया।

सभापति लार्ड लैमिंगटन महोदयने ताताजीके गुणोंका वर्णन करते हुए महत्व पूर्ण व्याख्यान दिया। आपने कहा कि ताता स्मारक सभामें प्रत्येक जाति और धर्मके सज्जन उपस्थित हैं यह बड़े हर्षकी बात है। आपने कहा कि किसी बड़े आदमीके मर जानेपर थोड़े दिनोंतक लोगोंका अफसोस ताजा रहता है। उस समय सभा होनेसे लोग बहुत बड़ी संख्यामें उपस्थित होजाते हैं। लेकिन ऐसे वक्त, जोशके मौकेपर लोगोंके विचारोंका मूल्य बहुत थोड़ा है।

खूबीकी बात यह है कि ताता स्मारक सभा इतने दिनोंके बाद की गई तब भी उपस्थित सज्जनोंकी संख्या इतनी अधिक

है । इससे पता चलता है कि ताताके जीवनका कितना प्रभाव लोगों पर है ।

हिज एक्सेलेंसीने कहा कि ताताजीका खास गुण उनका व्यवसाय मिला हुआ दान था । इस संबंधमें हिन्दुस्तानके और किसी निवासीने इतना बड़ा काम नहीं किया है । ताताने अपने उदाहरणसे दिखला दिया है कि व्यवसायमें रुपया लगाने से सर्वसाधारणका विशेष लाभ होता है और बनिस्बत कोरे दान करनेके अधिक रुपया भी दानमें दिया जाता है । ताताजी में दूसरी अपूर्व बात उनकी सादगी थी । आप सदा अपने देश-वासियोंको लाभ पहुंचाते रहे । आपने अपने फायदेका बहुत कम ख्याल किया । आप काम करना चाहते थे नाम करना नहीं । आप तारीफसे इतना भागते थे कि रिसर्चइन्स्टीट्यूटके साथ आप अपना नाम नहीं जोड़ना चाहते थे गोकि आपही उस संस्थाके कर्ता धर्ता विधाता थे । स्मारक बनवानेमें मिस्टर ताताका कुछ लाभ नहीं है । फायदा इसमें सोलहों आना उनलोगोंका है जो इसको बनवा रहे हैं । मिस्टर ताताका आदर करके मानों हम उन गुणोंका आदर करते हैं जिनके कारण वे जगत् प्रसिद्ध हुए या जिनके प्रभावसे उन्होंने देश-सेवाके इतने बड़े बड़े काम किये ।

स्मारक कमेटीने आधे लाखके लगभग रुपये इकट्ठे किये जिसमें न सिर्फ बंबई,बल्कि हिन्दुस्तानकी दूसरी जगहोंके लोगोंने भी चंदा दिया था । उन रुपयोंसे मिस्टर ताताकी प्रस्तरमूर्त्ति तैयार की गई

तारीख ११ अप्रैल सन् १९१२ ई० में बंबईके दूसरे गवर्नर सर जार्ज क्लार्कने ताताजीकी मूर्त्ति परसे परदा उठाया। बंबईके सभी प्रसिद्ध लोग मौजूद थे।

सर दिनशाईदुलजी वाचा (उस वक्त मिस्टर वाचा) ने एक सारगर्भित व्याख्यान देते हुए कार्रवाई शुरूकी। आपने कहा कि मिस्टर ताता जर्मनीके नाहेम नगरमें तंदुरुस्ती ठीक करने गये थे वहीं आपकी मृत्यु होगई। तारीख १६ मई सन् १९०४ ई० में आपके मरनेकी खबर इस देशमें पहुंची। समग्र देशपर शोककी घनघोर घटा छागई। उनके मरनेसे हिन्दुस्तान ने एक कर्मवीर व्यवसायी और सरल चित्तका सर्वप्रिय दाता और परम दूरदर्शी नेता खो दिया। देश भरमें जगह जगह शोक प्रकाशित किया गया। बंबईमें गवर्नर लार्ड लैमिंगटन बहादुरकी अध्यक्षतामें एक बड़ी सभा कीगई। उसी स्मारक सभाके उद्योगसे ताताजीकी भव्य प्रस्तर मूर्त्ति तैयार हुई है।

वाचाजीने गवर्नर सर जार्ज क्लार्क महोदयसे मूर्त्ति परसे परदा हटानेके लिये निवेदन किया। आपके बाद स्वर्गीय सर फिरोजशाह-मेहताने गवर्नर महोदयसे मूर्त्ति खोलनेके लिये आग्रह करते हुए ताताजीके गुणोंका गान किया। आपने कहा कि जो लोग कहते हैं कि ताताजी राजनीतिमें दिलचस्पी नहीं लेते थे वह गलत कहते हैं। ताताजीने प्लैटफार्म पर खड़े होकर व्याख्यान नहीं दिये हैं लेकिन धन और सहानुभूतिसे आप सदा राजनैतिक कामोंमें सहायता देते रहे हैं।

ताताजीमें खास बात यह थी कि उन्होंने व्यवसायमें सदा धर्म और सदाचार पर ध्यान दिया। कुछ लोगोंका ख्याल है कि झूठ और चालबाजीके बिना व्यवसाय चलही नहीं सकता है। उनको मिस्टर ताताकी जिंदगीसे सबक सीखना चाहिये। एम्प्रेस मिलके संबंधमें आपने एक बड़ा भारी सुधार किया था। पुरानी प्रथा यह थी कि एजेंट लोग तैयार माल पर कमीशन उगाहते थे। लेकिन ताताजीने कहा कि उनको सिर्फ उतने काम पर कमीशन मिलना चाहिये जितना उनके प्रबंधमें किया जाता है। मत, बिरादरी और जातिके भेद आपके चित्तमें कभी प्रवेश नहीं करने पाते थे। आप जो काम करते थे अपने देशकी भलाईके ख्यालसे करते थे, भारतमाताका मस्तक ऊंचा करनेके विचारसे करते थे। अंगरेजीमें एक कहावत है Charity begins at home. (दान घरसे आरंभ करना चाहिये) मिस्टर ताता कहते थे कि यह ठीक होसकता है कि दानका आरंभ घरसे किया जाय लेकिन उसकी इतिश्री घरपर नहीं होनी चाहिये।

मेहताजीने कहा कि ताता स्मारक केवल उस वीर और पवित्र आत्माके आदरके लिये नहीं बनाया गया है बल्कि उसका मुख्य प्रयोजन है कि वह दीपस्तम्भकी तरह अंधेरेमें भूले भटके भाइयोंको कर्तव्य मार्ग दिखलावे।

गवर्नर साहबने निम्नलिखित वचनोंसे मूर्त्ति परसे पर्दा हटा दिया।

देवियों और सज्जनों! सात बरससे अधिक होगये कि टाउनहालमें महाशय जमसेदजी नसरवानजी ताताके स्मारकके लिये सभा हुई थी। वह एक अपूर्व सभा थी जिसमें ताताजीके गुणोंके वर्णनमें हृदयग्राही व्याख्यान हुए थे। उस समयके उपस्थित सज्जनोंमें बहुतसे यह लोक छोड़ गये और बहुतसे हिन्दुस्तानके बाहर चले गये। फिर भी उनमेंसे बहुतसे महाशय आज भी मौजूद हैं। उनको यह देखकर प्रसन्नता होगी कि अंत में बंबई वासियोंकी अभिलाषा पूर्ण हुई। आप शायद कहें कि विलंब अधिक हुआ। लेकिन ऐसे काममें समय लगता ही है। विलंबसे एक बात अच्छी हुई। इतने दिनोंमें ताताजीके जीवनके तीनों बड़े काम लगभग पूर्ण होगये। साकचीका लोहेका कारखाना अच्छी तरह चल रहा है। गत जुलाईमें रिसर्च इन्स्टीट्यूट का पहला सेशन शुरू होगया। हाइड्रोएलेक्ट्रिक स्कीममें भी खूब सफलता होरही है। अस्तु ताताजीके जिन कामोंका स्मारक बनवाया जारहा है वे सब ठीक उतर गये। मेरे लिये बड़ी असुविधाकी बात यह है कि ताताजीके दर्शन मुझको न हो पाये थे। ताताजीमें वैज्ञानिक विचार और काम करनेकी अपार शक्ति का साथ साथ संयोग हुआ था। उनके जीवनका सबसे बढ़कर उद्देश्य था भारतीय कारीगरीका उद्धार। आपने सोचा कि प्रकृतिने सभी जरूरी चीजें इस देशमें बनाई हैं। उनको यह भी मालूम था कि शिक्षा मिलनेपर हिन्दुस्तानी उन चीजोंका उचित उपयोग भी कर सकते हैं। इसी विचारसे रिसर्चइन्स्टीट्यूट

की रचना हुई। बहुतसे लोग सोचते थे कि हिन्दुस्तानमें लोहे का काम बड़ी कामयाबीसे चल सकता है लेकिन उसको कार्य्य-रूपमें लाना मिस्टर ताताहीका काम था।

मिस्टर ताताने ३८ वर्षकी अवस्थामें नागपुरकी इम्प्रेस मिल खोली थी। उस कामको उठानेके पहले आपने लैंकशायरमें काफी तजरबा हासिल कर लिया था। मिल इतनी कामयाब रही कि २६ वर्षमें मूलधनका बारहगुना मुनाफा हिस्सेदारोंमें बांटा गया।

हिन्दुस्तानी युवकोंके उत्साहके लिये ऐसे महापुरुषका जीवन चरित्र लिखा जाना चाहिये। मालूम नहीं कितने गुण हम आपसे सीख सकते हैं। जिस स्मारकके खोलनेका सौभाग्य मुझको प्राप्त हुआ है, उससे उस महात्माका स्मरण होगा जिसके लिये पारसी जाति, बंबई सूबा और समग्र भारतवर्ष अभिमान करेगा।



उपसंहार ।

श्रद्धास्पद जमसेदजी नसरवानजी ताताके जीवनका वृत्तांत आपने पढ़ा। आपने देखा है कि किस तरह साधारण पुरोहित पारसी परिवारमें जन्म लेकर आपने उद्योग और पुरुषार्थसे व्यवसाय उठाया। धक्के पर धक्के खानेपर भी आपने धैर्य नहीं छोड़ा। युवावस्थामें आपने ऐसे ऐसे काम उठाये जिनके करने का साहस पहले किसी भारतवासीको नहीं हुआ था। इतनाही नहीं, आप उन कार्य्योंमें सफलीभूत भी रहे, उनसे अपार धन भी आपने पैदा किया और कमाये हुए धनको अखंड कीर्त्तिके बदलेमें आपने व्यय भी खूब किया। आपके दान और सत्कार्यों से देशको जो लाभ हुआ, होरहा है और होगा उसको भी पाठक जानते हैं। ऐसे महापुरुषकी अचानक मृत्युके वज्राघातको भी आपने सहन किया। आपने शोक मनाया, स्मारक सभाकी और मूर्तिमान उद्योग, परमदेशभक्त ताताजीका स्मारक भी आपने बनवाया। इतने दिन होगये, सब बातें पुरानी होगईं, लेकिन भारतमाता अब भी खिन्न मुख नीचे किये बैठी हैं। उनको ढाढ़स देनेके लिये आपको ऊंचे भाव हृदयमें लाने होंगे, उनको कार्यमें परिणत करना पड़ैगा, स्वार्थका ध्यान छोड़ना पड़ैगा, जातिभेद, मतभेद सब दूर हटाकर एक होकर देशको उठाना पड़ैगा। कर्मवीर जमसेदजी नसरवानजी ताताका जीवन हमको यही शिक्षा देता है। क्या आप उनका अनुकरण न करैंगे ?

प्रेमचन्दजीकी रचना ।

सप्त सरोज—इसमें बड़े घरकी बेटी, सौत, सज्जनताका दण्ड, पञ्च परमेश्वर, नमकका दारोगा और परीक्षा नामक सात अत्यन्त रोचक और शिक्षाप्रद गल्पें हैं। इन्हें पढ़कर स्त्रियां सुशीला, पंच निष्पक्ष, घूसखोर ईमानदार, जुल्मी जमीन्दार दयावान, नकली देशभक्त सच्चे देश सेवक और नवयुवक परोपकारी होनेकी चाह करने लगते हैं। शुष्कसे शुष्क हृदय भी इन गल्पोंको पढ़कर पसीज जाता है। इनके लेखक श्रीमान् प्रेमचन्द जी हिन्दुस्थानके उन थोड़ेसे भाग्यवानोंमें हैं जिनकी प्रतिभा अंगरेजी, संस्कृत, मराठी, बङ्गला, गुजराती, हिन्दी तथा उर्दूके अनेक विद्वानोंने स्वीकार की है। इनकी कहानियोंके अनुवाद कई भाषाओंमें हो चुके हैं। अंगरेजीके कई तथा हिन्दीके सभी विख्यात पत्रोंने मुक्त कण्ठसे सप्तसरोजकी सराहना की है।

अंगरेजीके सुप्रसिद्ध मासिकपत्र "माडर्न रिव्यू" की सम्मति सुनिये :—"लेखक की गल्पोंका सब एक स्वरसे लोहा मानते हैं। सभी गल्पें उपदेश प्रद हैं। इनमें मनुष्यके कई महत्वपूर्ण चरित्रोंका चित्रण बड़ी ही खूबीसे किया गया है। हम इस पुस्तकका खूब प्रचार चाहते हैं।" अनेक पूर्वीय भाषाओंके धुरन्धर विद्वान् मिस्टर आर० पी० ड्यूहर्स्ट एम० ए०, एफ० आर० जी० एस० आई० सी० एस० लिखते हैं—"प्रेमचन्दजीकी कितनी ही कहानियां पढ़कर मैंने बहुत विशेष आनन्द प्राप्त किया है। अवश्य ही इनमें कहानियां लिखनेकी ईश्वरीय शक्ति है।"

हिन्दीकी एकमात्र विख्यात पत्रिका सरस्वती लिखती है—"पुस्तक पढ़ने लायक है। कहानियोंमें स्वाभाविकता है और उनसे शिक्षा भी मिलती है। मनोरंजन भी खूब होता है।"

प्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रताप' लिखता है—"कहानियांअत्यन्त मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं। भाषासे प्रसाद गुण बरसा पड़ता है।

इसी प्रकार अभ्युदय, हिन्दी चित्रमयजगत् आदि अनेक पत्र पत्रिकाओंने इस पुस्तककी तारीफ की है। ऐसी उत्तम, सुन्दर, सजिल्द पुस्तकका मूल्य केवल ॥) आना है। थोड़ी प्रतियां बची हैं, जल्दी कीजिये।

नवनिधि—यह श्रीमान् प्रेमचन्दजीकी गल्पोंका दूसरा संग्रह है। इसमें ९ गल्पें हैं। अभी हालमें निकला है। इसकी गल्पें भी बड़ी ही सुन्दर और भाव पूर्ण हैं। लाला कन्नोमल एम० ए० जज धौलपुरने इन कहानियोंको पढ़कर लिखा है :—"इन कहानियोंके लेखक की जितनी प्रशंसाकी जाय कम है।" पुस्तकका मूल्य केवल ॥≈) आना।

महात्मा शेखसादी—यह भी श्रीमान् प्रेमचन्दजी की रचना है। महापुरुष शेखसादीका मनोरंजक और उपदेशप्रद जीवन-चरित्र, उनका अनूठा भ्रमण वृत्तान्त, उनके जग प्रसिद्ध गुलिस्तां और बोस्तांकी उदाहरणों सहित आलोचना पढ़कर चित्त प्रसन्न हो जाता है। इसमें ऐसी अच्छी अच्छी कहावतें और नीति कथायें चुनकर दी गई हैं, कि पढ़कर सदा स्मरण रखनेकी इच्छा होती है। भाषा बड़ी सजीव है। पुस्तक आइवरी फिनिश कागज पर बहुत अच्छी छपी है। मूल्य ।≈) आना।

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,१२६ हरीसनरोड,कलकत्ता।

गजपुरीजीकी पुस्तकें।

श्रीमान् पं० मन्ननजी द्विवेदी, गजपुरी, बी० ए०, एम० आर० ए० एस० का नाम हिन्दीके प्रायः सभी पाठक जानते हैं। कवितायें जैसी आप की जोरदार होती है वैसे ही गद्यमें भी सजीवता भरी रहती है। हिन्दीके प्रेमी पाठक हाथों हाथ आपकी पुस्तकें खरीदते हैं। आप की नीचे लिखी पुस्तकें हमारे यहांसे मिलती हैं।

रामलाल—अपने ढङ्गका पहला और निराला उपन्यास है। गावोंकी दशाका सच्चा और मार्मिक चित्र है। बिलकुल स्वतन्त्र है। पुस्तक की छपाई इण्डियन प्रेसकी है. दाम २२८ पृष्ठ की पुस्तक का केवल ॥=)

भारतके प्रसिद्ध पुरुष—भारतके १७ प्रसिद्ध पुरुषोंके जीवनचरित्र अत्यन्त सरल रीतिसे सीधी सादी भाषामें लिखे गये हैं मूल्य केवल ।=) आना।

आर्यललना—भारतकी अनेक वीर और विदुषी स्त्रियोंके चरित्र। इस पुस्तककी भाषा भी बड़ी सरल है। थोड़ी पढ़ी-लिखी स्त्रियां और लड़कियां भी इसे पढ़कर लाभ उठा सकती हैं। मूल्य ।)

प्रेम—पांच सौ लाइनोंमें प्रेमकी पद्यात्मक कहानी है। प्रत्येक प्रेमीको इसका रस चखना चाहिए। उदाहरणके लिए एक पद्य उद्धृत है।

"प्रेम-रत्न मत खोना चाहे सोना हीरा लुट जावै।
पीके हीसे हृदय न टूटै चाहे दुनियां छुट जावै॥"

